योगपूर्णं तपोनिष्ठं वेदमूर्तिं यशस्विनं /

गौरवर्णं गुरुश्रेष्ठं भगवत्या सुशोभितं //

कारुण्यान्मृतंसागरं शिष्याभाक्तादिसेवितं /

श्रीरामं सद्गुरुं ध्यायेत तमाचार्यवरं प्रभुं //

//श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः//

//ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये

वरावरदा सर्वज्ञानम् वशमान्य स्वाहा//

[लक्ष्मीगणपति मंत्र (रक्षार्थ हेतु),

सारसंग्रह]

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलसारभक्षणं I

उमासुतं शोकविनाशकारणं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजं II

// शुभ 卐 लाभ //

// हरिहरः ॐ तत्सत् //

खण्ड - १

जैविक-अक्षांश

(राहु रुपी छाया की लौकिक माया - सन् २०४५-२०५०)

प्रस्तुतीकरण/लेखक

श्रीमान किसलय कश्यप [एम.ए.(लोकप्रशासन)]

संस्करण :- प्रथम

(मुक्त-स्रोत)

विक्रम सम्वत :- २०७७

दिवस :- मातेश्वरी ललिता सप्तमी

मुहूर्त :- जीव/अमृत-मुहूर्त [विशाखा(पद-२)]

मास(पक्ष) :- भाद्रपद (शुक्ल-पक्ष)

सहयोग व प्रोत्साहन राशि :- इच्छानुसार [किन्हीं को भी दान(और पुरोहित जी को दक्षिणा) की महिमा अलौकिक है]

(कृपया भीम यू. पी. आई. के बार-कोड के मदद से सहायता-राशि दान करें)

भूमिका

धर्म रुपी पुरुषार्थ-प्राप्ति हेतु प्रकरण दैवीय प्रकल्प के मध्य कार्मिक-सिद्धांत हैं। इन सबों के मध्य दैवीय-संविधान का प्रारूप वेदों के चक्षुओं ,अर्थात ज्योतिष-विद्या, में निहित हैं । अतः व्यक्ति-विशेष को ज्योतिष-विद्या के नियमों से साक्षात्कार होना अति आवश्यक है(1)।

(1).....।। वीणा तज्ज्यौतिषं नान्यो ज्ञातुं शक्नोति करहिचित ।।**१२।।**

[बृहत् पराशर होरा शास्त्र (अध्याय २)]

गोचर में ग्रहों की नक्षत्र के विशेष पद में उपस्थिति और व्यक्ति-विशेष के जन्म-कुंडली(राशि-चक्र का भाव/चलित-चक्र) में उपस्थित विशेष-स्थिति ज्योतिषीय कार्य-कारण सिद्धांत को प्रतिपादित करती है । अतएव, फलाफल हेतु ये अति महत्वपूर्ण है कि दोनों में समानता हो । अन्यथा शुभाशुभ फल कतई फलीभूत नहीं होगी(1) ।

// हरिहरः ॐ तत्सत //

(1).....राशिनामुदयो लग्नं तद्वशादेव जन्मिनाम ।

ग्रहयोग-वियोगाभ्यां फलं चिन्त्यं शुभाशुभं ॥ ६ ॥

[बृहत् पराशर होरा शास्त्र (अध्याय ३)]

प्राक्कथन

वैदिक ज्योतिष वेदों के छह आगमों में एक है । अतः इस वांग्मय की महत्ता हेतु विधा को ही वेदों के नेत्र-तुल्य संज्ञा से अलंकृत किया गया ।

श्रीभास्कराचार्य उवाच

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं कल्प: करौ।

या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्दं आद्यैर्बुधै:॥

वैदिक ज्योतिष निगमात्मक साहित्य की सर्वोच्च उपलब्धि है जिसे प्रत्येक व्यक्ति(या फिर कम से कम ब्राह्मणगण को अवश्य ही) को अवगत होनी चाहिए ।

बृहत् पराशर होरा शास्त्र ,अध्याय २, में उक्त है :-

इदं ते कथितं विप्र! सर्वं यस्मिन भवेदिति ।

भूतान्यपि भविष्यन्ति तत्तज्जानन्ति तद्विदः ॥ ११ ॥

विना तज्ज्यौतिषां नान्यो ज्ञातुं शवनोति काहिरचित ।

तसमादवष्यमध्येयं ब्राह्मणेश्च विशेषतः ॥१२ ॥

यो नरः शास्त्रंज्ञातया ज्योतिषं खलु निन्दति ।

रौरवं नरकं भुक्त्वा चान्धत्वं चान्यजन्मनि ॥१३ ॥

अतः ,

मूर्तित्वे परिकल्पित: शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मनामात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्तामरज्योतिषाम् ।।

लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा य: श्रुतौ वाचं न: स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रवि: ।। १.१ ।।

(आचार्य वराहमिहिर ,बृहज्जातकम् , अध्याय १)

अर्थात ,

"सूर्य नारायण देव हम सबों को ध्वनि प्रदान करें ; जो अपने प्रकाश से तीनों लोकों को ज्योतिर्मान करते हैं और चंद्र के अलग अलग दशाओं को प्रकट करते हैं ; जो वो मार्ग प्रदान करते हैं जिससे कि पुनर्जन्म नहीं होता ; जो योगियों के स्वत्त्व और त्यागियों के त्याग ; अमर ज्योति , देवताओं ,ग्रहों और तारों के वाहक ; जो सातों जगत के सृजनकर्ता ,पालनकर्ता , और संहारकर्ता हैं और जिनके वेदों में विभिन्न नामों से वन्दना की जाती है ।"

॥ ॐ श्रीसूर्यनारायणाय नमो नमः ॥

विशेष

(१).

पुण्यं वाप्यथ पापरूपमपि वा कर्मार्जितं प्राग्भवे

तत्पायकोऽत्र तु खेचरस्य हि दशाभुक्त्यादिभिर्ज्ञायते ।

तस्मात्खेटदशाविभाग इह चावश्यं क्रमात्तत्फलं

ज्ञेयं तत्तदनिष्टशांतिकरणादिष्टं सुखं प्राप्नुयात् ।।२।।

(उत्तरकलामृतम् ,दशाफलखण्डः , प्रथम कांडः ,अध्याय ६ , कालिदास)

अर्थात

जातक अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का फलाफल (उसके जन्म कुंडली में) ग्रहों के दशाओं और भुक्तियों के मध्य पाता है|

अतः ग्रहों के दशाओं को विभक्त किया जाता है और उन दशाओं के मध्य फलों की जानकारी को प्राप्त करनी चाहिए जिससे कि जातक अपने इच्छित व प्रसन्नता हेतु आवश्यक शान्ति के मार्ग को अपनाये और किसी भी प्रकार के अशुभता से मुक्ति मिले ।

(२).

ज्ञानवान पाठकों से आशा की जाती है कि उन्हें मूलभूत ज्योतिषीय नियमों की संज्ञानता होगी ।

विषय सूची

(अ). शास्त्रीय परिचय

(आ). विषय प्रवेश

गोचर में राहु

१. नक्षत्र(पद) :- मकर-राशि का

धनिष्ठा(पद-२)......................................

२. नक्षत्र(पद) :- धनु-राशि का

मूला(पद-३)..

३. नक्षत्र(पद) :- वृश्चिका-राशि का

अनुराधा(पद-४).....................................

(इ). परिशिष्ट

अवलोकन सह टिपण्णी...............................

संदर्भित ग्रन्थ-सूची..

लेखक परिचय..

(अ). शास्त्रीय परिचय

विशेष :- श्रीमद्भगवद्गीता

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।

जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ||३६||

(अध्याय १०)

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ||४१||

(अध्याय १०)

(क) राहु

शीतांशुमित्रांतकमिडयरूपं

घोरं च वैडूर्यनिभ विबाहुं ।

त्रैलोक्य रक्षापरमिष्टदं च

राहुं ग्रहेन्द्र हृदये स्मरामि ||

// अथाहं सैहिंकेस्य ध्यानं //

धूम्रकारो नीलतनुर्वानस्थोऽपि भयंकरः ।

वातप्रकृतिको धीमान स्वर्भानुस्तत्समः शिखी ||३० ||

(बृ.प.हो.शा., अध्याय ३)

राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखीति केतुः पर्यायमन्यमुपलभ्य वदेच्च लोकात ||३||

(बृहज्जातकाम् ,अध्याय २ ,वराहमिहिर)

प्रकृति :-

(१).

राहुस्वरूपं शनि वननि शायद जातिर्भुजंगोस्थिनैर्ऋतीशः|

केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खग स्वरूपात्फलगुह्यमित्वं||८ ||

[प्रश्नचण्डेश्वर(श्रीमन्महामहोपाध्यायदैवज्ञरामकृष्ण) ,अध्याय ५]

अर्थात

राहु का स्वरुप शनिवत है परन्तु जाति निषाद ,सर्प ,अस्थि, नैऋत्यकोण का स्वामी है|केतु शिखावाला अनेक रूपधारी है|

(२).

तत्रार्क-शनि-भुपुत्राः क्षीणेन्दु राहु-केतवः |

क्रूराः शेषग्रहा सौम्याः, क्रूरः क्रूर-युतो बुधः || ११ ||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३)

यद्भावेशयुतौ वापी यद्द्भावसमागतौ |

तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोप्रहौ ||१३||

(बृ.प.हो.शा., अध्याय ३४)

अर्थात

राहु और केतु मुख्यतः किसी राशीश के युति में अथवा भाव-विशेष में होने का प्रभाव देंगे ।

(३).

स्वोच्चापकृष्टा भगणैः प्राङ्भुखं यान्ति यद्ग्रहाः ।

तत् तेषु धनमित्युक्तमृणं पश्चान्मुखीषु तु ।।५।।

दक्षिणोत्तरतोऽप्येवं पातो राहुः स्वरंहसा ।

विक्षिपत्येष विक्षेपं चन्द्रादीनामपक्रमात् ।।६।।

(अथ सूर्यसिद्धान्ते स्पष्टाधिकारः ।।२।।)

अर्थात

जब ग्रह ,अपने उच्च (स्थिति से), दूर होकर अपनी कक्षा में आगे बढ़ते हैं तो गति की कुल मान को उनका धन कहते हैं और वक्री के स्थिति में ऋण कहते हैं ।।५।।

ठीक उसी तरह राहु ,अपने उचित बल हेतु , चंद्र और अन्य ग्रहों के अपने अपने अपक्रम को विक्षेप प्रदान करता है ।।६।।

दिशा :- दक्षिण-पश्चिम

ग्रहों के वैदिक-ऋतुएँ

हेमंतोऽपि गुरोर्ज्ञेयः शनेस्तु शिशिरो द्विज !

अष्टौ मासाश्च स्वर्भानोः केतोर्मासत्रयं द्विज || ४३ ||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३)

जाति

राहुश्चाण्डालजातिश्च केतुर्जात्यंतरस्तथा |

शिखीस्वर्भानुमंदानां वल्मीकं स्थानमुच्यते ||४१||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३)

ग्रहों के प्रकार :- [धातु , मूल और जीव संज्ञा]

राह्वारपंगुचन्द्राश्च विज्ञेया धातुखेचराः|

मूलग्रहौ सूर्यशुक्रो अपरा जीवसंज्ञकाः ||४७||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३)

[अर्थात राहु धातु-ग्रह हैं जबकि केतु जीव-ग्रह]

राहु के नैसर्गिक मित्र :- गुरु बृहस्पति , शुक्र , व शनि|

राहु के नैसर्गिक शत्रु :- सूर्य , चंद्र , मंगल व केतु|

राहु के सम :- बुध |

विशेष :- तात्कालिक-संबंध नैसर्गिक-संबंध हेतु जनित फलों पर शुभ/अशुभ प्रभाव पड़ते हैं |

दश बन्ध्वाय सहज स्वांत्यास्थास्ते परस्परम् |

तत्काले मित्रतां यान्ति रिपवोऽन्यत्र संस्थिताः || ५६ ||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३)

अन्योन्यस्य धनव्ययाय सहजव्यापारबंधूस्थितास्तत्काले सुहृदः स्वतुंगभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा |

द्व्येकानुक्तभपान्सुहृत्समरिपूंसंचिंत्या नैसर्गिकांस्तत्काले च पुनस्तु तान्धिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत ||१८||

[बृहज्जातकाम् ,अध्याय २ ,वराहमिहिर]

स्थान

नीचश्रेण्यशुचिस्थलं वरुणदिक्छास्तुः शनेरालयो |

वल्मीकाहितमोविलान्यहिशिखिष्टानानि दिग्रक्षसः || १६ ||

(फलदीपिका ,अध्याय २)

...........राहु और शिखी(केतु) का स्थान चींटियों की पहाड़ी/टीला ,सर्प के अँधेरे बिल और दक्षिण-पश्चिम दिशा है |

कारकतत्व

आत्मादिकः कलादिभिर्नः भोगः सप्तानामाष्टानांवा ||११||

(बृहज्जातकाम् ,अध्याय २, वराहमिहिर]

अर्थात

सातों ग्रहों में ,सूर्य से शनि पर्यन्त, अथवा आठ ग्रहों ,सूर्य से राहु तक , जिसका भी अंश/कला सबसे ज्यादा होगा वो आत्मकारक ग्रह होगा |

अथाऽहं संप्रवक्ष्यामि प्रहानात्मिदिकारकां |

सप्तरव्यादिशंयन्तान् राहवंतान् वष्ट संख्यकात् ||१||

अंशैः समौग्नहौ द्वौ चेदराहवंतान् चिन्तयेत् तदा |

सप्तैव कारकानेवं केचिदष्टौ प्रचक्षते ||२||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३२)

अर्थात

"अब मैं विस्तार में आत्मकारक आदि जो सात ग्रहों से प्राप्त होतें हैं उनके सन्दर्भ में बताऊंगा | कुछ कहतें हैं कि राहु एक कारक होंगे जब भी एक ऐसी स्थिति आएगी जिसमें दो ग्रहों के अंशों का मान बराबर होंगे | हांलाकि कुछ कहतें हैं कि स्थिति से निरपेक्ष होकर आठ ग्रहों के साथ राहु को भी मानना पड़ेगा|"

कारकांश के फल

राहौ चौरश्च धानुष्को जाता वा लोहयन्त्रकृत ||१७||

विषवैद्योऽथवा विप्र ! जायते नाऽत्र संशयः |

व्यवहारी गजादीनां केतौ चौरश्च जायते ||१८||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३३)

(१) विशेष

राहु-सूर्य कारकांश में :-

रविराहू यदा स्वांशे सर्पद भीतिः प्रजायते |

शुभदृष्टौ भयं नैव पापदृष्टौ मृतिभवेत ||१९||

शुभषड्वर्गसंयुक्तौ विषवैद्यो भवेत् तदा |

भौमक्षिते कारकांशे भानुस्वर्भानुसंयुते ||२०||

अन्यग्रहा न पश्यन्ति स्ववेश्मप्रदाहकः |

तस्मिन् बुद्धेक्षि ते चापि वह्निदो नैव जायते ||२१||

पापर्क्षे गुरुणा दृष्टे समीपगृहदाहकः |

शुक्रदृष्टे तु विपेन्द्र ! गृहदाहो न जायते ||२२||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३३)

(२) विशेष

केतुदृष्टे सुखे चन्द्रे नीलकुष्ठी प्रजायते |

चतुर्थे पंचमवाऽहि स्थितौ राहु-कुजौ यदि ||७९||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ३३)

“.....और अगर राहु-मंगल की युति कारकांश से चतुर्थ या पंचम भाव में हो रही है तो जातक को यक्ष्मा/क्षयरोग/तपेदिक होगा |”

राहवान्तर्दशा के फलाध्याय

कृपया बृहत् पराशर होरा शास्त्र के अध्याय संख्या ५५ देंखें|

ग्रहों की दृष्टियां

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्तिचरणाभिवृद्धितः |

रविजामरेज्येरुधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल विक्षणेऽधिकाः ||१३||

[बृहज्जातकाम् ,अध्याय २, वराहमिहिर]

अर्थात

ग्रहों की चार प्रकार की दृष्टियां मानी गईं हैं :-

(१). एकपाद(एक चरण)/चतुर्थांश दृष्टि :- जन्म कुंडली के जिस भाव में ग्रह विशेष बैठे हुए हैं ,उस भाव से तृतीय व् दशम भाव की दृष्टियां एकपाद(अर्थात एक चौथाई अंश की) दृष्टि कहलाती है ;

(२). द्विपाद(दो चरण)/अर्धांश(अर्थात आधा अंश की) दृष्टि :- प्रश्नोक्त ग्रह की पंचम व् नवम भावों पर दृष्टियां अर्धांश दृष्टि है ;

(३). त्रिपाद(/तीन चरण)/तृतीयांश(अर्थात तीन-चौथाई अंश की) दृष्टि :- सम्बंधित ग्रह विशेष की चतुर्थ व् अष्टम दृष्टियां त्रिपाद दृष्टियां हैं ; तथा

४). पूर्ण दृष्टि(/पूर्णांश) :- इस नियमान्तर्गत, ग्रह विशेष अपनी पूर्ण दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है |

विशेष :-

(क).

त्रिव्द्येकपादाः क्रमशोः निधेयाः शनैश्चराचार्य महीसुतानाम् |

त्रिकर्मणोर्द्धीशुभयोश्च रन्ध्रबंधवोः स्थितानामिह पूर्वद्दक्षु ||५||

(श्रीपतिपद्धतिः ,अध्याय २)

अर्थात

मंगल , गुरु बृहस्पति ,और शनि की अतिरिक्त पूर्ण दृष्टियां होती हैं (अर्थात मंगल की चतुर्थ व् अष्टम दृष्टियां , गुरु की पंचम और नवम दृष्टियां ,और शनि की तृतीय व् दशम दृष्टियां पूर्ण होती हैं |

(ख). एकपाद ,द्विपाद ,और त्रिपाद दृष्टियां अपूर्ण हैं ,अतएव ये खण्ड-दृष्टियां हैं |

(ग). राहु तथा केतु की दृष्टियां अन्य सभी ग्रहों(सिवाय वक्री ग्रहों के) के समान सीधी(वामावर्त) ना होकर विपरीत(अर्थात दक्षिणावर्त) होती है | अर्थात लग्न में बैठे हुए मंगल की लग्न से तृतीय व् दशम भाव पर क्रमशः अपने एकपाद दृष्टियों से देखेंगे ;जबकि लग्न में बैठे हुए राहु/केतु चतुर्थ तथा एकादश भावों को एकपाद दृष्टियों से देखेंगे | वहीँ सभी वक्री ग्रह की दृष्टियां भी क्षणिक रूप से दक्षिणावर्त(राहु व् केतु की तरह) हो जाएंगे |

चरेषु संस्थिताः खेटाः पश्यन्ति स्थिरसंगतान् |

स्थिरेषु संस्थिता एवं पश्यन्ति चारसंस्थितान् ||१४||

उभयस्थास्तु सुर्यादया पश्यन्युभयसंस्थितान् |

निकटस्थं विना खेटाः पश्यन्तित्ययमागमः ||५||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ८)

अर्थात

चर-राशि(स्वयं से दूसरे भाव के स्थित अचर-राशि को छोड़ कर) में स्थित ग्रह शेष तीन सभी अचर-राशियों को देखते हैं | उसी तरह से , कोई ग्रह अगर अचर-राशि(स्वयं से दूसरे भाव के स्थित चर-राशि को छोड़ कर) में हैं तो शेष तीनों चर-राशियों पर दृष्टिपात करते हैं | और किसी भी एक द्वी-स्वभावी राशि में हैं तो उपरोक्त नियमानुसार शेष सभी तीनों द्वी-स्वभावी राशियों पर दृष्टिपात करते हैं|

संबंद्धित विषयें

तैलक्रयी भृतकनीचकिरातकायस्काराश्च दन्तिकरटाश्च पिकाः शनेः स्युः ।

बौद्धा हितुण्डिखराजवृकोष्ट्रसर्पद्वान्तादयो मशकमत्कुणकृम्युलुकाः || २० ||

(फलदीपिका , अध्याय २)

अर्थात

............बौद्ध, सर्प पकड़ने वाला , गदर्भ , पुरुष

भेड़/लोमड़ी/ऊंट/रेंगनेवाला कोई भी जीव ,कोई भी अन्धेरा जगह - इन सबों को घोषित करनी चाहिए कि राहु-केतु के हैं |

राहु के विषयें

छत्रं चामरराष्ट्रसंग्रहकुतर्कक्रूरवाक्यान्त्यजाः

पापस्त्रीचतुरन्तयानवृषला द्युतश्च संध्याबलम् ।

दुष्टस्त्रीगमनान्यदेशगमनाशौचास्थिगुल्मानृताऽधोद्भ्रामिकगारु

डा यममुखम्लेच्छदिनीचाश्रयाः ||५१||

दुष्टग्रंथिमहाट्वि विषसंचाराद्रिपीड़ा बहिःस्थान

नैऋतिदिक्किप्रयानिलकफक्लेशोऽहि नींमारुताः ।

तीक्ष्णं दीर्घसरीसृपौ सकलसुप्तार्थः प्रयाणक्षणो वृद्धो

वाहननागलोकजननीताता मरुच्छुलकाः ||५२||

कासश्चासमहाप्रतापवन दुर्गोपासका दुष्टा सांगत्यं

पशुभिस्त्वसव्यलिपिलेख्यं क्रूरभाषा त्वगोः ।

(उत्तरकलामृतम् ,कारकत्व खंडः, प्रथम कांडः ,अध्याय ५, कालिदास)

अर्थात

(श्लोक संख्या ५१-५२.५) :- १. छतरी, २. चौरी(किट-पतंग को उड़ाने हेतु), ३.राज्य, ४. भीड़, ५. गलत तर्क, ६ बातों से दुःख देना, ७. व्यभचारी स्त्री, ८. सजी हुआ गाड़ी, ९. नास्तिक पुरुष, १०. जुआ, १२. धुँधला प्रकाश में मजबूती, १३. दुष्ट महिला से उलझना, १४. विदेश जाना, १५.अशुद्धता, १६. हड्डी, १७.स्प्लीन में बढ़ोतरी, १८.असत्य, १९.नीचे की ओर देखना, २०.दुविधा, २१. पन्ना/मरक़द मणि, २२.दक्षिण की ओर मुख, २३.शूद्रों या मलेच्छ का निवास, २४. दर्द के साथ सूजन(हड्डी या मांसपेशी में), (२५). बहुत बड़ा जंगल, (२६). पठारी जगह पर भटकना, (२७). पहाड़, (२८). दर्द, (२९). बाहर रहना, (३०). दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर उन्मुख होना, (३१). हवा, (३२). कफ, (३३). दुःख, (३४). सर्प, (३५). रात्रि में ठंडी वायु, (३६). तीक्ष्ण, (३७). लम्बी अवधि, (३८). रेंगनेवाला जन्तु, (३९). स्वप्न को पढ़ना, (४०). यात्रा, (४१). एक मुहूर्त, (४२). बढ़ती हुई उम्र, (४३). एक वाहन, (४४). सर्पलोक, (४५). माँ, (४६). पिता या नाना जी, (४७). वायु, (४८). तीक्ष्ण दर्द, (४९). श्लेष्मा, (५०). श्वसन, (५१). तीक्ष्ण कुशलता, (५२). जंगल, (५३). माँ दुर्गा का उपासक, (५४). दुष्टता, (५५). चौपाया जन्तु के साथ अप्राकृतिक संबंध|

राहु एक मारक के रूप में

राहुश्चेदयवा केतुर्लग्ने कामेऽष्टमे व्यये ।

मारकेशांमदे वाऽपि मारकेशेन संयुतः ||२२||

मारकः स च विज्ञेयः स्वदशान्तर्दशास्यपि ।

मकर वृश्चिके जन्म राहुस्तस्य मृतिप्रदः ||२३||

षष्ठाऽष्टरिष्टफगो राहुस्तद्दाये कष्ट्दो भवेत् ।

शुभग्रहयुतो दृष्टो न तदा कष्टकृन्मतः ||२४||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ४४)

अर्थात

अगर राहु या केतु लग्न ,या लग्न से सप्तम या अष्टम या द्वादश भाव में उपस्थित हों ,या एक मारक स्वामी से सप्तमस्थ हों ,या किसी मारक स्वामी के साथ युति हो तो अपने महादशा या अन्तर्दशा के मध्य उनमें मारकत्व की क्षमता आ जाती है | जातक जिनका जन्म मकर या वृश्चिका लग्न में हो तो उनके लिए राहु

मारक-ग्रह निश्चय ही होंगे | अगर राहु लग्न से षष्टम या अष्टम या द्वादश भाव में हों तो जातक वो अपने महादशा या अन्तर्दशा में कठनाइयां अवश्य देंगे | वो वैसा नहीं करेंगे अगर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि या युति में हों |

जन्म-लग्न से तृतीये भाव(मृत्यु का)

तृतीये शनि राहुभ्यां युक्ति दृष्टेऽपि वा द्विज |

विषार्तितो मृतिर्वाच्या जलाद्वा वह्निपीडनात् ||२७||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ४४)

अर्थात

अगर जन्मलग्न से तीसरे भाव पर शनि और राहु की दृष्टियां पद रहीं हों ,या फिर दोनों की युति हो रही हो तो जातक की मृत्यु विष या जल या अग्नि या ऊचांई से गिरने या कारावास की वजह से होगी |

जन्म के समय राहु के अवस्था का प्रभाव

यदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते ।

बृषेऽय युग्मेऽपि च कन्यकायामजे समाजो धनधान्यराशेः ।।१२३।।

उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगदेन जनः परितप्तः ।

राजसमाजयुतो बहुमानी वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात् ।।१२४।।

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीड़िते ।

दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ।।१२५।।

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभा नृणां ।

धनोन्नतिर्गुणोंन्नतिः सदा विदामगाविह ।

धराधिपाधिकारिता यशीलता तता

भवेन्नवीननिरवाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः ||१२६||

गमने च यदा राहौ बहुसंतानवान्नरः |

पंडितो धनवान् डाटा राजपूज्यो नरो भवेत् ||१२७||

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः |

कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ||१२८|

सभागतो यदा राहुः पंडितः कृपणोः नरः |

नानागुणपरिक्रान्तो वित्त सौख्य समन्वितः ||१२९||

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलत्वं सदारातिभीत्या भयम् |

महद्बन्धुवादी जनानां निपातो भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं ||१३०||

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् |

मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ||१३१||

नृत्यलीपसागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम् |

नेत्ररोगी रिपोर्भीतिर्धनधर्मलक्ष्यो नृणाम् ||१३२||

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् |

परदाररतो नित्यं परवित्तापहारकः ||१३३||

निद्रावस्थां गते राहौ गुणग्रामयुतो नरः |

कांतासंतानवान् धीरो गर्वितो बहुवित्तवान् ||१३४||

(बृ.प.हो.शा. , अध्याय ४५)

अर्थात

अगर राहु **साम्यावस्था** में हैं ,तो जातक बहुतया दुःख भोगेगा ; लेकिन अगर राहु इसी अवस्था में होकर वृषभ या मिथुन या कन्या या मेष राशि में हैं ,तो जातक धन और लाभ को अर्जित करेगा | अगर राहु **उपवेसनावस्था** में हैं तो जातक को व्रण-रोग से ग्रसित होगा और मर्यादित होगा जबकि शासन-प्रशासन से निकटता रहेगी लेकिन वित्तय सुख से दूर रहेगा | अगर राहु **नेत्रपानी अवस्था** में हैं ,तो जातक को आँख संबंधी रोगों ग्रसित होगा ,तथा सर्प , चोरों व दुष्ट लोगों से भयाकुल होगा और आर्थिक हानि भी होगी | अगर राहु **प्रकाशावस्था** में हैं तो जातक ऊँचे पद पर आसीन होगा और साथ हि शुभ कर्मों को सम्पादित भी करेगा ;वो वित्तय मामले में पदोन्नति प्राप्त करेगा ;जबकि राजा के सभा में मंत्री होगा ;वो नए

नए उमड़ते हुए बादलों(जो अब बरस जाएगा और दूसरों को आनंद प्रदान करेगा) की तरह प्रसन्नचित स्वभाव का होगा ,और वो विदेशों में बहुत सुखी भी होगा | अगर राहु **गमनावस्था** के हैं तो जातक को बहुत बच्चें होंगे ,बुद्धिजीवी ,धनी ,दानवान ,और राजाओं के द्वारा सम्मानित होगा | अगर राहु **अगमनावस्था** के हैं तो जातक स्वभाव का चिड़चिड़ा ,गुसैल ,बुद्धिहीन , धनहीन ,मुर्ख ,कंजूस , और व्यभिचारी ही होगा | अगर राहु शुभावस्था के हैं तो जातक बुद्धिमान ,कंजूस ,सदगुणों वाला ,धनिक और सुखी होगा | अगर राहु **आगमावस्था** के हैं तो जातक हमेशा मानसिक परेशानी ग्रसित और शत्रुओं से भयभीत तथा मुकदमों में घिरा रहने वाला होगा ;जबकि अपनों से दूर होगा ,और वित्तय हानियों से जूझेगा ,लेकिन चतुर और चालाक व स्वतंत्र भी होगा | अगर राहु **भोजनावस्था** में हैं तो जातक को खाद्य सामाग्री से सम्बन्धित कठनाइयां होंगी ,वो अपने आप में शक करने वाला ही होगा ,और वैवाहिक जीवन व संतानों का सुख की प्राप्ति नहीं होगी | अगर राहु **नृत्यालिप्तावस्था** में हैं तो जातक को बहुत हि गंभीर व असाध्य बीमारी से ग्रसित होगा और उसके आँख ग्रसित होंगे ,जबकि शत्रुओं से आतंकित होगा और उसके वित्तय व नैतिक स्थिति का पतन होगा | अगर राहु **कौतुकावस्था** में हैं तो जातक को उच्च पद या स्थान पर आसीन नहीं हो पायेगा ,जबकि औरों के पत्नियों में रूचि दिखलायेगा और

धनों की चोरी भी करेगा | अगर राहु **निद्रावस्था** में हैं तो जातक के पास अनेक प्रकार के गुणों की भण्डार होगा ,अपने धर्मपत्नी व बच्चों से सुखी ,सम्पन्न ,और साहसिक ,स्वाभिमानी ,व धनी होगा |

//हरिहरः ॐ तत्सत्//

(आ). विषय प्रवेश

(१). राहु का गोचर

१. नक्षत्र(पद) :- मकर-राशि के अंतर्गत
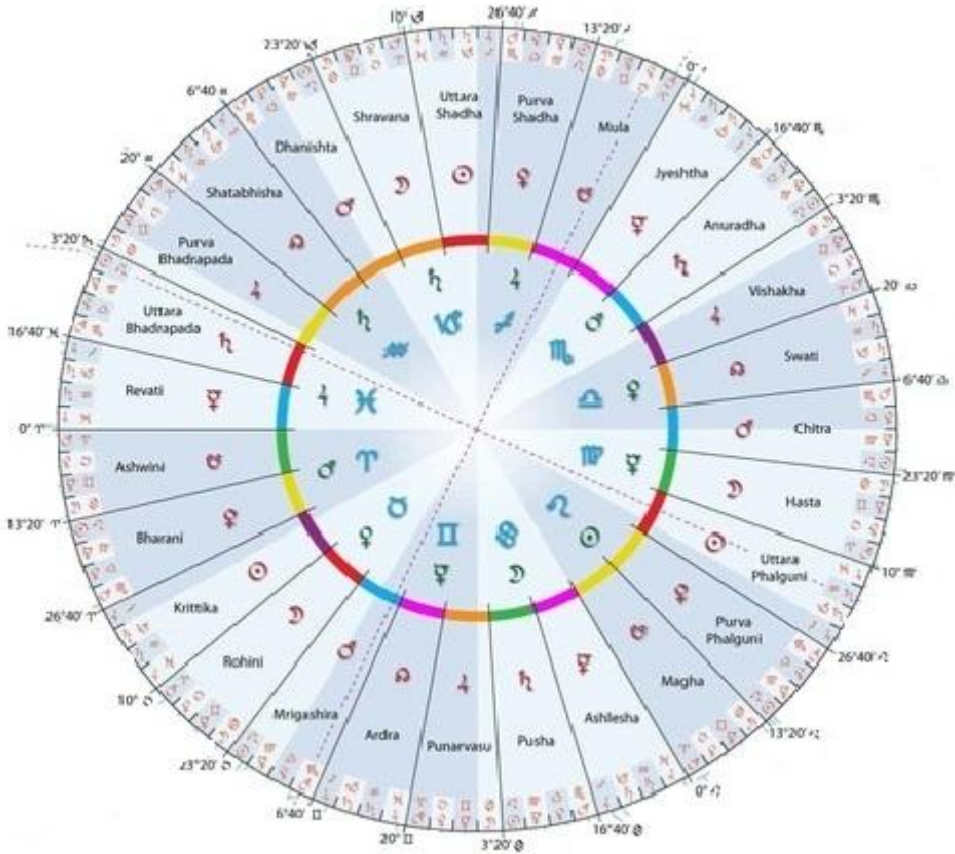
चित्र १. नक्षत्रें व उनके विभिन्न पदों में निहित राशियां
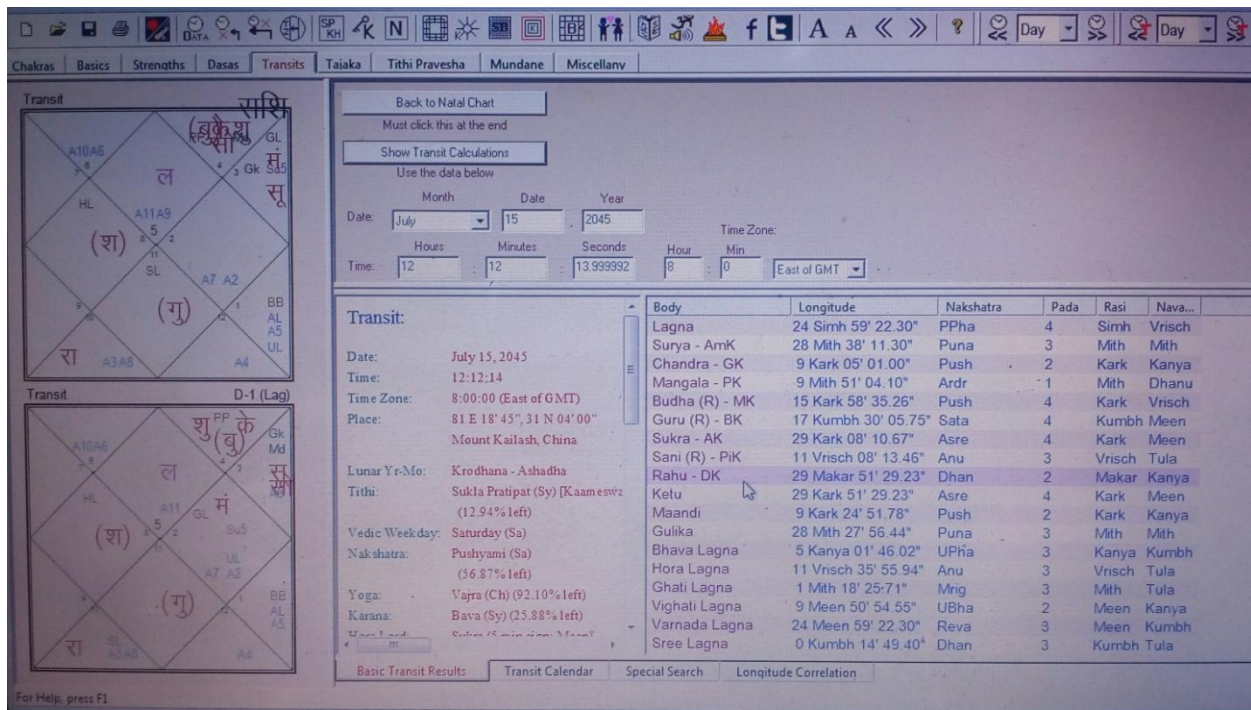
चित्र २(अ). राहु की धनिष्ठा[पद-2(मकर-राशि के अंतर्गत)] में प्रवेश (दिनांक :- १५/जुलाई/२०४५)

चित्र २(आ). ग्रहों के नक्षत्र-पदें व राहु की दृष्टियां

(दिनांक :- १५/जुलाई/२०४५)

Aspect Table with Relationships

	Sy	Ch	Ma	Bu	Gu	Sk	Sa	Ra	Ke	1st	2nd	3rd	4th	5th	6th	7th	8th	9th	10th	11th	12th
Sy		0	0	0	59	0	29	74	1	22	69	53	6	88	78	53	28	3	0	0	0
Ch	0		0	0	68	0	47	83	0	13	52	62	23	53	87	62	37	12	0	0	0
Ma	0	0		5	44	16	4	67	17	63	75	25	50	100	75	37	12	0	0	0	13
Bu	0	0	0		74	0	54	88	0	8	40	67	35	30	92	67	42	17	0	0	0
Gu	63	28	94	5		39	41	0	41	94	81	81	19	0	0	0	6	37	81	75	25
Sk	0	0	0	0	85		65	99	0	0	22	68	53	7	86	78	53	28	3	0	0
Sa	60	52	76	58	70	80		84	81	54	0	0	0	46	88	63	27	46	88	63	73
Ra	2	31	33	54	0	98	16		100	79	54	29	4	0	0	0	21	67	54	8	84
Ke	0	0	0	0	85	0	66	100		0	21	67	54	8	84	79	54	29	4	0	0

चित्र २(इ). मकर-राशि व ग्रहों की विभिन्न दृष्टियां (दिनांक :- १५/जुलाई/२०४५)

परिचय :- धनिष्ठा [पद-2(मकर-राशि के अंतर्गत)]
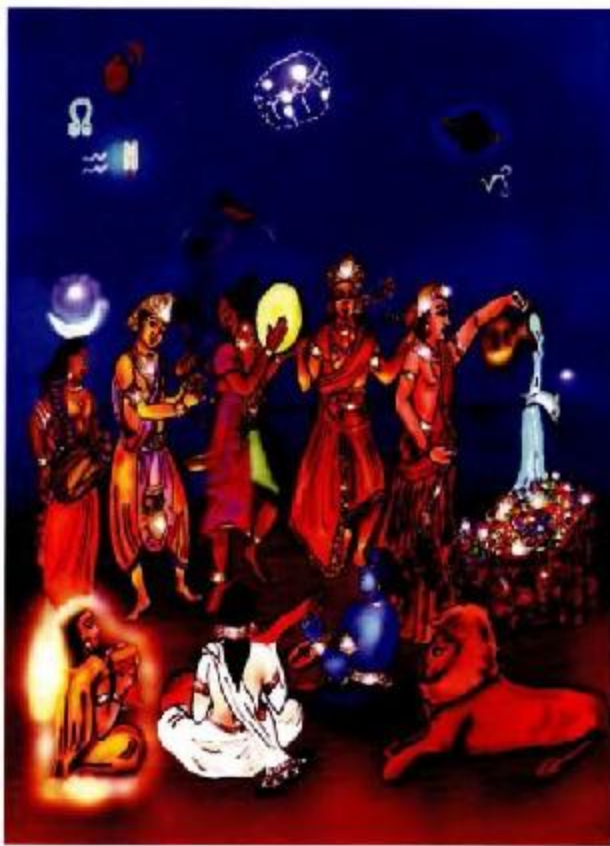
23 Dhanishta 23°20' Capricorn - 6°40' Aquarius

चित्र :- ३ [**स्रोत-ग्रन्थ :-** बुक ऑफ़ नक्षत्र - कम्प्रेहैन्सिव ट्रीटाइज ऑन २७ कॉन्स्टेलशनस् (श्री प्रशांत त्रिवेदी)]

संक्षिप्त-परिचय :- धनिष्ठा मंगल की ऊर्जा की पराकाष्ठा है| "धनिष्ठा" का शाब्दिक अर्थ है "सबसे धनी " या " सबसे बड़ा उपकारवाला" | इस शब्द का वैकल्पिक नाम है श्रविष्ट जिसका अर्थ है सबसे ज्यादा लोकप्रिय | ज्योतिषविद इस नक्षत्र के प्रतिक को एक नगाड़े के रूप में अभिव्यक्त किये हैं | लेकिन ये भगवान् शिव के डमरू स्वरुप ही है | डमरू दो गुणों की अभिव्यंजना है - एक संगीत और दुसरा शून्यता की अवस्था |

शून्यता बाहरी आयामों के प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है | अध्यात्म के उच्चतम स्तर पर ये नक्षत्र

व्यक्ति-विशेष को सृष्टि के नियामक लय के अनुरूप बनने के लिए ग्राह्य-योग्य बनाती है और इस प्रकरण में उस व्यक्ति का अहंकार तत्व बाधक नहीं बनता है | चूँकि ये नक्षत्र श्रवण के पश्चात आता है ,अतः ये उस प्रकरण के निर्माण का सूचक है जिसका श्रवण भूतकाल में किया गया था | अतएव ,धनिष्ठा नक्षत्र प्रकरण को सम्पादित करने की योग्यता प्रदान करता है ,जैसे कि संगीत को बजाने कि प्रक्रिया ,इत्यादि | जबकि निचले स्तर पर ,धनिष्ठा-नक्षत्र निम्न-कोटि की प्रभाव व उससे जनित श्रृंखलाओं हेतु अतिसंवेदनशील भी है | अतः इस नक्षत्र का बाह्य-कर्मों का आयाम ,सापेक्ष दृष्टिकोण में, अंतःकरण से सम्बन्धित कर्मों की तुलना में उध्र्वमुखी नहीं है |

ज्ञातव्य है कि डमरू ही लयात्मक वाद्य-यंत्र है जिसका अभिन्न संबंध स्वर/ध्वनि व काल(अर्थात समय) से है और काल/समय ही सृष्टि कि परिकल्पित लय है | अतः धनिष्ठा नक्षत्र का एक विशेष बिंदु या समय की अवधि है जब सम्बन्धित कार्य का क्रियान्वयन लयात्मक ही होता है।

प्रस्तुत नक्षत्र का वैकल्पिक प्रतिक बंसी/बांसुरी होता है जो इस बात का प्रतिनिधित्त्व करता है कि एक बंसी से संगीत का आविर्भाव उसके शून्यता में निहित है ! अतः ये अतिश्योक्ति नहीं है कि

सृष्टि के प्रकल्प में आकाशीय-संगीत का स्रोत ब्रह्मांडीय-शून्यता ही है ।

विशेष :- धनिष्ठा नक्षत्र के अधिष्ठात्री देवता निम्नांकित आठ वसु हैं :-

धरो ध्रुवश्च, सोमश्च, अहश्चैवानिलोअनत:।

प्रत्यूषश्च प्रभासश्च, वसवो अष्टाविति स्मृता:॥

(महाभारत, अनुशासन-पर्व, अध्याय-१५०, श्लोक-१६)

अर्थात, अहश, ध्रुव, सोम, धरा, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास अष्ट वसु देव हैं ।

कतमे वसवः इति अग्निश्च पृथिवी च, वायुश्चान्तरिक्षं च, आदित्यश्च द्यौश्च, चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः, एतेषु हीदं सर्वं वसु हितमेते हीदं सर्वं वासयन्ते, तद्यदिदं सर्वं वासयन्ते तस्माद् वसवः।

(शतपथ-ब्राह्मण, १४।५।७।४)

अर्थात

वसु कौन हैं? अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा, नक्षत्र-यही आठ वसु हैं। इनमें ही ये सब वसते हैं, सबको वासस्थान

देते हैं, इसलिए इनका नाम वसु है। इस प्रकार वसु के अर्थ वास स्थान देनेवाला मानकर वसु संज्ञा हुई है।

अग्निश्च जातवेदाश्च सहौजा अजिरा प्रभुः।

वैश्वानरो नर्यपाश्च पङ्क्तिराधश्च सप्तमः।

विसर्पो सृमोऽग्निनामैतेऽष्टौ वसवः क्षितौ ॥

(तैत्तिरीयारण्यक १।९।१)

अर्थात

अग्नि, जातवेदः, सहौजा, अजिरा, वैश्वानरः, नर्यपाः, पंक्तिराधः, विसर्पो - ये आठ वसु भूमि पर ही हैं, अर्थात् यह आठ नाम अग्नि के ही हैं। यही आठ प्रकार की अग्नि आठ वसु माने जाते हैं।

प्रकृति और कार्यप्रणाली :- धनिष्ठा नक्षत्र कि प्रकृति और कार्यप्रणाली का स्रोत मुख्यतः इसके अधिष्ठात्री देवताओं के प्रकृति है ।

धनिष्ठा की प्रकृति है कि ये अपने ऊर्जा-स्रोत के लिए किसी के अनुरूप लयबद्ध हो जाया करती है । और ये इस नक्षत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है|

सृष्टि के दैवीय संविधान के अंतर्गत , धनिष्ठा नक्षत्र का संबंध ख्यातिपात्री-शक्ति(अर्थात ख्याति प्रदान करने कि शक्ति) से है |

क्रियात्मकता का साधन

वैदिक ऋषियों ने इस नक्षत्र को एक अत्यंत सक्रिय नक्षत्र कि संज्ञा दिए हैं | इस नक्षत्र के प्रभाव में जातक/जातिका औरों से अधिक सक्रिय होते हैं | इस नक्षत्र का ध्येय है कि संसार में आना और अपने कर्म संपादित करना |

जाति :- इस नक्षत्र की जाति कृषक वर्ग का है |

लिंग :- स्त्रीलिंग

शरीर का अंग/भाग(आयुर्वेद के अनुसार) :- पीठ और गुदा| ये नक्षत्र पित्तीय प्रकृति का है |

दिशा : - पूर्व, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण ,पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम |

धनिष्ठा(पद-२) की विशेषताएं

धनिष्ठा नक्षत्र के पद-२ मकर-राशि के अंतर्गत २६डिग्री ४० मिनट से ३० डिग्री तक की सीमा है।इसकी नवांश कन्या राशि के अंतर्गत है जिसके स्वामी बुध हैं।ये नक्षत्र-पद कौशलता व वाक्पटुता से सम्बन्धित है।ये पद अनुकूलनीय-शक्ति का कोष है।ये पद व्यक्ति के व्यवसाय व नौकरी में सफलता प्रदाता है ,अपितु वैवाहिक जीवन के लिए एक अभिशाप-तुल्य क्योंकि बुध की अस्थिरता/परिवर्तनशीलता शुभ नहीं है।बुध का स्वामित्त्व इस पद के जातकों को बुद्धि-प्रयोग हेतु शारीरिक अंगों का तारतम्य प्रदान करता है।अतः इन जातकों में संगीत व खेल के विधाओं में सफलता का सूचक है।

गण, गुण व तत्त्व :-

गोत्र के दृष्टिकोण से, इस नक्षत्र का संबंध सप्तऋषि अंगिरस जी से है।धनिष्ठा नक्षत्र का गण राक्षस तथा एक तामसिक नक्षत्र है।ये एक उधर्वमुखी नक्षत्र है जो बढ़ाव और विस्तार को संकेत करता है। ये एक चर-प्रकृति का नक्षत्र है जिसका अर्थ है कि ये अपने आप में प्रत्येक प्रकार का परिवर्तन ला पाने केयोग्य है। धनिष्ठा नक्षत्र का अभिन्न सम्बन्ध शुक्ल- व कृष्ण- पक्षों के अष्टमी तिथि से है।पशु-यौन के दृष्टिकोण से ये सिंह जाति का है।

जबकि आकाशीय तत्त्व से संबंधित है | अतः ये नक्षत्र अन्य सभी तत्त्वों(अर्थात भू- ,जल-, अग्नि- ,तथा वायु-) से मेल-मिलाप व साझा करने की शक्तियों को अपने पास रखता है |

ज्योतिषीय समाधान

(१) धनिष्ठा नक्षत्र के पद-२ से संबंधित अशुभ फलों से मुक्ति हेतु **" कर्म-विपाक संहिता "** में निम्नलिखित प्रकरण बताया गया है :-

|| अथ त्रिनवति तमोऽध्यायः ||

श्री शिव उवाच

पश्चिमायां महाडडदेवी एवास्ट पुरं महत् |

महानंद इति ख्यातः सर्वदेशे सुरेश्वरि ||१||

वासंती बहवो म्लेच्छाः स्वविद्यायां विचक्षणाः |

ब्राह्मणस्तत्र वै देवी विद्यां निपुणास्तथा ||२|

तिष्ठत्यशङ्कया तित्यं म्लेच्छान्नं भुज्यते सदा |

स संध्यारहितो विप्रः पिशुनो दुर्मतिः शठः ||३||

सञ्चितं बहुसाहस्त्रं स्वर्णरत्नगजादिकम् ।

ततो बहुदिने जाते तस्य मृत्युरभूत्पुरा ।।४।।

सर्पेण दष्टो देवेशि पञ्चके निर्जलेपि वा ।

यमदुतैर्महादेवी यमाज्ञां गृह्य वै द्विजम् ।।५।।

रौरवे क्षिप्तवाञ्छिघ्रं महाकष्टं प्रभुज्यते ।

षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।।६।।

नरकान्निः सृतो देवि ग्राह्योनिरभूत्पुरा ।

पुनः कच्छपयोनिश्च मानुषत्वं ततोऽभवत् ।।७।।

पूर्वजन्मनि भो देवि ब्राह्मणत्वं यतोऽत्यजत् ।

अपुत्रत्वं ततो देवि कन्यका नैव जायते ।।८।

म्लेच्छान्नं भुज्यते देवि संध्यां च तर्पणं विना ।

ऑटो व्याधियूटो नित्यं न सुखं लभते क्वचित् ।।९।।

शान्ति शृणु वरारोहे पूर्वपापप्रणाशिनीम् ।

गृहं शुभ्रं वरारोहे धनधान्यसमन्वितताम् ।।१०।।

संचितान्नं वरारोहे ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।।११।।

हवनं तदद्शांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ।

त्रैमासिकव्रतं कुर्याद व्रतं च रविसप्तमी ||१२||

जातवेदेति मन्त्रेण लक्षजापयन्तु कारयेत् ।

ततो गां कपिलां देवि स्वर्णवस्त्रविभूषिताम् ||१३||

दद्यात्सवस्त्रां विधिवद्ब्राह्मणाय शिवात्मने ।

अश्वदानं च कर्तव्यं चामरं छत्रमेव च ||१४||

एवं करते न संदेहो व्याधिनाशो भवेद्ध्रुवं ।

पुत्रोपि जायते देवि वन्ध्यात्वं च प्रणाशयेत् ||१५||

इति श्रीकर्मविपाकसंहितायां पार्वतीशिवसंवादे धनिष्ठानक्षत्रस्य द्वितीयचरणप्रायश्चितकथनन्नाम त्रिनवतितमोऽध्यायः ||९३||

अर्थात

श्री शिव कहते हैं :-

हे देवि ! हे सुरेश्वरि ! पश्चिम दिशा में यवनपुर में महानंद ब्राह्मण था ।।१।। हे देवि ! उसमें म्लेच्छविद्या में निपुण बहुत म्लेच्छ वास करते थे । और वहां विद्या में निपुण ब्राह्मण भी बहुत से वास करते थे ।।२।। और वहां एक ब्राह्मण निर्भय होकर नित्य

म्लेच्छान्न को खानेवाला , संध्या से रहित ,चुगली करनेवाला ,दुर्मति तथा धूर्त उत्पन्न हुआ ||३|| और स्वर्ण ,रत्न ,गज आदि का बहुत संचय किया करता था | बहुत दिन बिट जाने के बाद उसकी मृत्यु हो गई ||४|| हे देवेशि ! वह ब्राह्मण निर्जल देश में सर्प के काटने से मर गया और उसको यमराज के दूतों ने आज्ञा पाकर नरक में दाल दिया ||५|| राउरक नरक में शीघ्र पंहुचकर महाकष्टों को भोगने लगा और वहां साठ हज़ार वर्षों तक दुखों को भोगता रहा ||६|| फिर हे देवि ! नरक से निकल कर ग्राह योनि को प्राप्त होकर मनुष्य हुआ ,फिर कछुआ की योनि को प्राप्त होकर मनुष्य हुआ ||७|| हे देवि ! पहले जन्म में उसने ब्राह्मण धर्म का त्याग किया था , इससे पुत्र रहित हुआ और कन्या भी नहीं हुई ||८|| हे देवि ! म्लेच्छ का अन्न खाया किया , संध्या व् तर्पणादि नहीं करता या, इससे नित्य व्याधियुक्त तथा सुख की किंचित् प्राप्ति भी नहीं हुई ||९||

हे वरारोहे ! पूर्वपाप के नाश करनेवाली शान्ति को कहता हूँ ,अच्छा शुद्ध घर धनधान्य सहित ||१०|| हे वरारोहे ! अन्नसमेत ब्राह्मण को | गायत्री के मूल मंत्र का एक लक्ष जप करे ||११|| और उसका दशांश हवनादि करे तथा बराबर तीन महीनों तक समाप्त होनेवाला व्रत करे , और रविवार सहित सप्तमी का व्रत करे ||१२|| हे देवि ! जातवेद-मन्त्र का लक्ष जप करे और कपिला गौ

का दान विधिपूर्वक ब्राह्मण को दे ||१३|| शिवस्वरूपी ब्राह्मण को घोडा और चमर तथा छत्र का दान देवे ||१४|| हे देवि ! ऐसा करने से सम्पूर्ण व्याधि का नाश हो और पुत्र की प्राप्ति हो और वंध्यापना भी नष्ट होव , इसमें कोई संदेह नहीं करना चाहिए ||१५||

|| तिरानबे अध्याय समाप्त ||

२. धनिष्ठा नक्षत्र के अशुभ फलों से बचाव हेतु जातक/जातिका को नित्य प्रतिदिन माँ भगवती दुर्गा जी या भगवान हरिहर स्वरुप की पूजन अर्चन करनी चाहिए|

विशेष :- वैकल्पिक रूप से आठों वसुओं की पूजन-अर्चन से भी धनिष्ठा नक्षत्र हेतु जनित पीड़ाओं से मुक्ति मिलती है | राज-योग के अभ्यास से इस नक्षत्र के घनात्मक प्रभावों को उपयोग में लाया जाता है |

[नोट :- महाभारत में गंगापुत्र भीष्म पितामह(जिन्हें देवव्रत के नाम से भी जाने जाते हैं) के संदर्भ में, धनिष्ठा नक्षत्र के घनात्मक प्रभाव को भलीभांति देखा जा सकता है|]

|| इति शुभमस्तु ||

(२). राहु का गोचर

१. नक्षत्र(पद) :- धनु-राशि के अंतर्गत
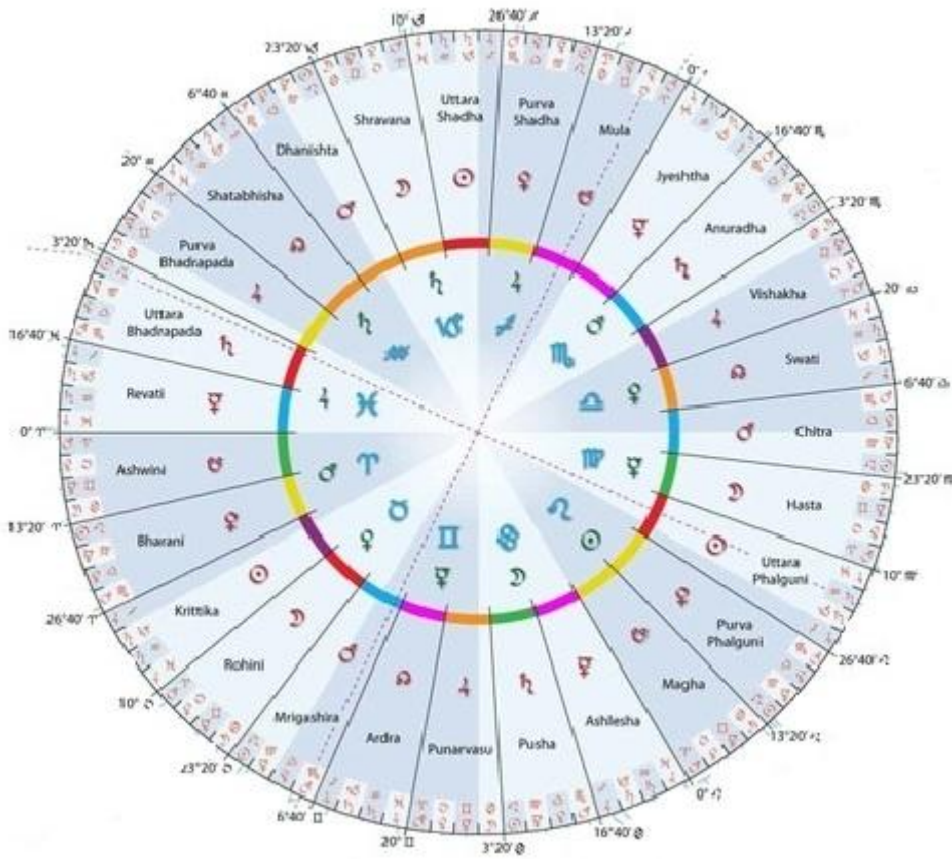
चित्र ४. नक्षत्रें व उनके विभिन्न पदों में निहित राशियां
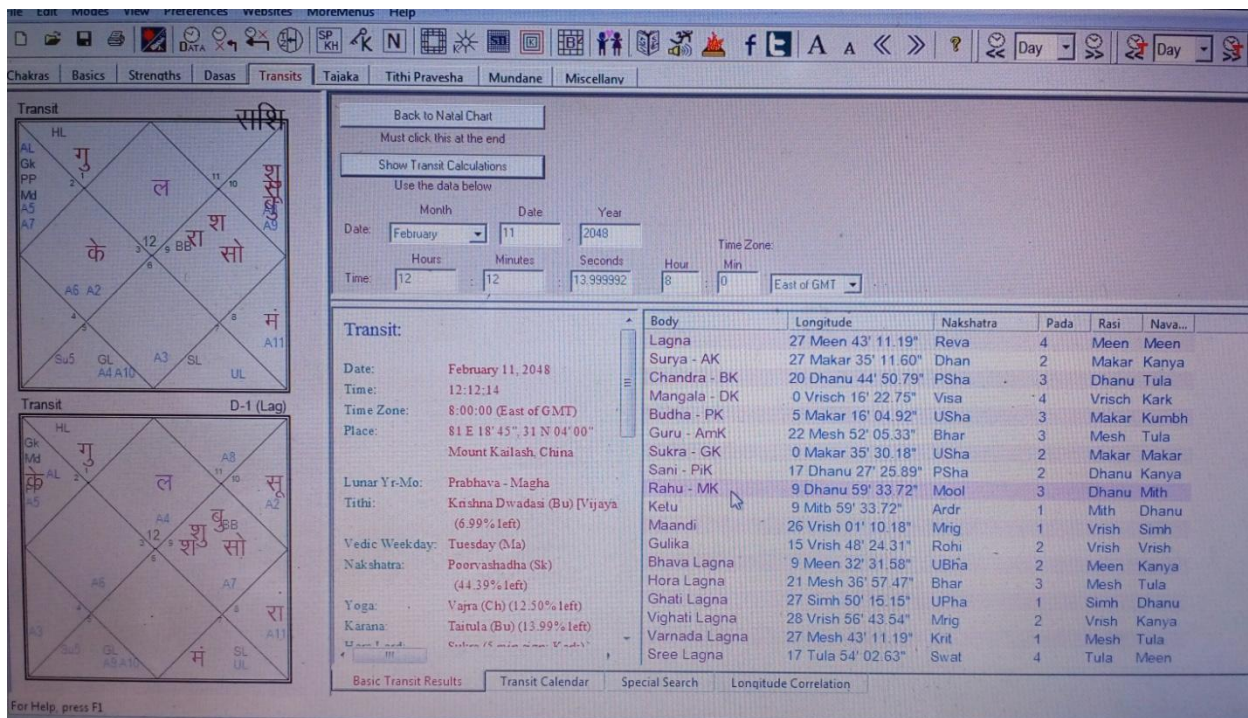
चित्र ५(अ). राहु की मूला[पद-३(धनु-राशि के अंतर्गत)] में प्रवेश

(दिनांक:-११/फरवरी/२०४८)
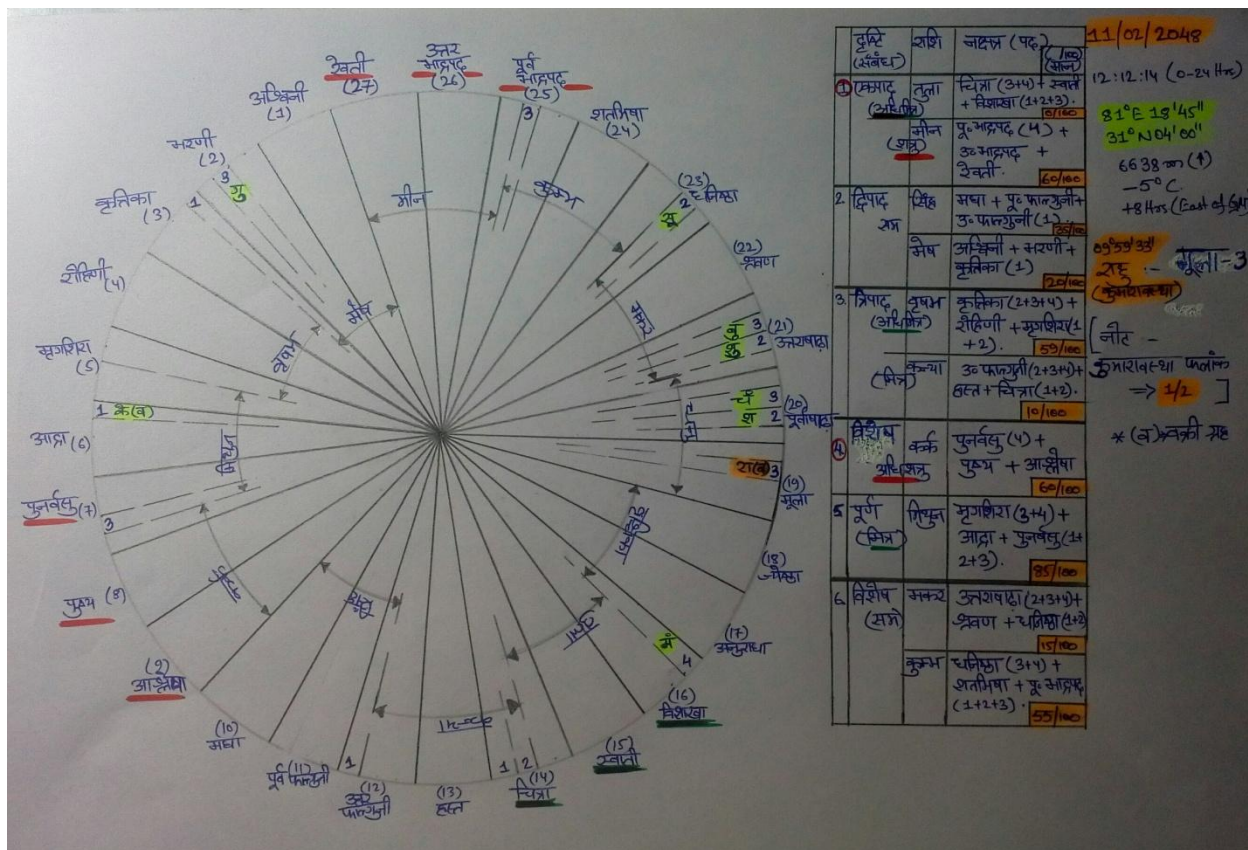
चित्र ५(आ). ग्रहों के नक्षत्र-पदें व राहु की दृष्टियां

(दिनांक:-११/फरवरी/२०४८)

Aspect Table with Relationships

	Sy	Ch	Ma	Bu	Gu	Sk	Sa	Ra	Ke	1st	2nd	3rd	4th	5th	6th	7th	8th	9th	10th	11th	12th
Sy		0	23	0	67	0	0	0	29	25	75	50	0	100	75	50	25	0	0	0	0
Ch	6		0	0	46	0	0	0	64	69	38	23	94	69	44	19	0	0	0	6	37
Ma	93	17		37	75	26	14	8	84	4	91	100	54	27	2	0	0	0	23	94	54
Bu	0	0	4		60	0	0	0	16	62	56	13	75	81	56	31	6	0	0	0	19
Gu	21	98	94	69		81	95	89	14	0	0	4	33	79	84	16	96	79	88	21	0
Sk	0	0	0	0	56		0	0	31	70	52	5	90	77	52	27	2	0	0	0	23
Sa	34	0	0	0	41	0		0	75	66	33	34	91	66	67	66	0	0	0	34	91
Ra	15	0	0	0	29	0	0		100	60	20	59	85	60	35	10	0	0	0	15	55
Ke	60	91	16	79	0	83	94	100		10	0	0	0	15	55	60	20	59	85	60	35

Aspecting planet

Chart used: D-1
Full aspect value: 100
Houses from: Lg

Uchcha (exalted) Neecha (debilitated)
Moolatrikona Swagriha (own house)
Adhimitra griha (good friend's house)
Mitra griha (friend's house) Sama griha (neutral house)
Satru griha (enemy's house) Asta (combust)
Adhisatru griha (bad enemy's house)

Aspect Legend (color code):
Swagriha (own house) Blue
Adhimitra (best friend) Bold Italic Green
Mitra (friend) Green
Sama (neutral) Black
Satru (enemy) Red
Adhisatru (worst enemy) Bold Italic Red

चित्र ५(इ). धनु-राशि व ग्रहों की विभिन्न दृष्टियां

(दिनांक:-११/फरवरी/२०४८)

19. Mula 0°0' - 13°20' Sagittarius

चित्र :- ६ [**स्रोत-ग्रन्थ :-** **बुक ऑफ़ नक्षत्र - कम्प्रेहैन्सिव ट्रीटाइज ऑन २७ कॉन्स्टेलशनस् (श्री प्रशांत त्रिवेदी)]**

संक्षिप्त-परिचय :- नौ नक्षत्रों के तीसरे व अंतिम समूहों में मूला नक्षत्र पहला समूह है उन नौ तारों का जो सिंह के पूंछ के समान प्रतीत होती है ! ज्योतिषीय दृष्टिकोण से ये सब धनु राशि के अंतर्गत ही आते हैं जिनके पहले तीन चरण गण्डान्त होते हैं | अतः इस नक्षत्र के पहले तीन चरणों में से किसी एक में भी जन्में जातक/जातिका को नक्षत्र-गण्डान्त दोष का अशुभ फल लगता है |

मूल शब्द का प्रायोगिक अर्थ जड़ होता है ,अर्थात केंद्र अथवा अंतरतम बिंदु |

मूला नक्षत्र के जातक सीधे और प्रत्यक्ष रूप से व्यवहार करते हैं और कभी भी गोल-मोल बात नहीं करते हैं |

इस नक्षत्र का प्रतिक "एक गुच्छे में बंधा हुआ जड़ों का समूह" है । चूँकि प्रत्येक सभी जड़ें आपस में बंधे हुए हैं ,अतः ये नक्षत्र के कार्यप्रणाली की भी अपनी सीमाएं और बाधाएं हैं । और जिस हेतु मूला बारंबार रूप से जातक/जातिका को बहुत ज्यादा स्वतन्त्रता

प्रदान नहीं करता है ,अपितु सीमित परिसीमा में ही गहन

अनुसंधान का प्रारूप प्रदान करता है । और यही विशेषता इस

नक्षत्र को अन्य सबों से भिन्न बनाता है ।

विशेष :- माँ निऋृति इस नक्षत्र के अधिष्ठात्री देवी हैं | गुरु बृहस्पतिदेव(क्योंकि धनु राशि के अंतर्गत मूला नक्षत्र के सभी पपडों का समन्वय है) के भागीदारी हेतु मूला नक्षत्र आध्यात्मिक उपलब्धियों का स्रोत है तथा भौतिकवादी सुविधाओं का शिखर भी |

मूलांक १९ इस नक्षत्र की विशेषता है और भाग्यशाली भी है | अतः ये अतिश्योक्ति नहीं है कि जिस भांति मातेश्वरी कालिका माँ पार्वती जी के ही संहारात्मक स्वरुप हैं, उस भांति इस नक्षत्र के अपने गुण हैं |

प्रकृति और कार्यप्रणाली

मूला का सर्वप्रथम पहल विषय/वस्तु की जड़ तक पहुँचना है | यह एक क्रूर नक्षत्र है जो अपने इच्छाशक्ति के अनुसार ही प्रयासशील होता है | वैक्तिक परिभाषा का जन्म अश्विनी नक्षत्र में होता है

,जबकि प्रौढ़ मघा में होता है और समापन मूला में होता है | इस भांति ये नक्षत्र के जातक/जातिका अहंकार व आत्म-केन्द्रित भाव से परे अनुभवों को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं जो उन्हें आध्यात्मिक धरातल पर अलौकिक उपलब्धियां प्रदान कराता है | अतः निम्न स्तर पर जहां ये नक्षत्र विध्वंस के कारकत्व को सम्प्रेषित करता है ,वहीँ अध्यात्म के ऊँचे आयामों में आत्मबोध व शुद्धि व सिद्धि प्रदायक भी है(और इस शुभ प्रकरण में गुरु बृहस्पति देव का अभिन्न योगदान है) |

रामायण व महाभारत में क्रमशः रावण तथा कंस के संदर्भ में मूला-नक्षत्र प्रभावी था |

वहीँ त्रेतायुगीन रुद्रावतार भगवान श्री हनुमान जी भी मूला-नक्षत्र के अंतर्गत उदय-लग्न के जातक हैं जिन्हें भक्ति व शक्ति की अपूर्व व अतुलनीय उदाहरण प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ गौरव प्राप्त है और जिन्हें चिरंजीवी होने का वरदान भी प्राप्त है !

क्रियात्मकता का साधन

मूला नक्षत्र एक सक्रिय नक्षत्र है और इसके जातक/जातिका अपने विचारों को क्रियान्वित करने में विलम्ब नहीं करते हैं | यद्यपि मूला नक्षत्र के जातक विशेषतः एक साधक हैं ,अपितु इनकी

सक्रियता अन्य सभी तामसिक व राक्षस-गण के नक्षत्रों के सापेक्ष में अत्यधिक भयावह बनाती है | अतएव ,जातक/जातिका पूर्ण रूप से प्रस्तुत नक्षत्र के सृजनात्मक शक्तियों का उपभोग नहीं कर पाते हैं |

जाति :- इस नक्षत्र की जाति कसाई-वर्ग की है |

लिंग :- नपुंसक

शरीर का अंग/भाग(आयुर्वेद के अनुसार) :-

ये शरीर के पैर के भाग को दर्शाता है जो शरीर के भार का वहां करता है ; अतः इस नक्षत्र के जातक/जातिका के कन्धों पर दायित्वों के भार को वहन करने हेतु हैं | ये शरीर के बाएं धड़ को भी दर्शाता है |

ये एक वायु प्रधान नक्षत्र है |

दिशा : - दक्षिण-पश्चिम , उत्तर-पश्चिम , उत्तर-पूर्व और पूर्व दिशा से सम्बन्धित है | अपितु ये नक्षत्र का कारकत्व मध्य/केंद्र-स्थान ही है |

मूला(पद-३) की विशेषताएं

मूला नक्षत्र का पद-३ का अक्षांश धनु राशि के ०६ डिग्री ४० मिनट से १० डिग्री तक की सीमा में आता है और इसका नवांश मिथुन-राशि(जिसके स्वामी बुध हैं) में पड़ता है | बुध के भागीदारी हेतु वर्त्तमान नक्षत्र-पद ,जातक/जातिका के लिए, सम्बन्धित विषयों में बौद्धिक क्षमताओं के दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करता है | अतः ये मूला नक्षत्र का सबसे महत्वपूर्ण पद है | अतएव, ये नक्षत्रपद बुद्धिमानी/कुटिलता , वार्तालाप ,संचार ,और वैक्तिक संबंधों का पर्याय हो जाता है | मूला इन सभी क्षेत्रों में अपना अधिराज्य/अधिपत्य स्थापित करना चाहता है | शुभत्व की दृष्टिकोण से ,नक्षत्र के तृतीये पद में कोई भी ग्रह-विशेष आध्यात्मिकता और भौतिक मूल्यों के मध्य एक संतुलन ही स्थापित करेगा |

गण, गुण व तत्त्व

गोत्र के दृष्टिकोण से , इस नक्षत्र का संबंध सप्तऋषि पुलस्त्य जी से है | ये राक्षस गण का नक्षत्र है जिसमें प्रतियोगिता का भाव की अति है ! और इस हेतु जातक/जातिका में अहंकार तत्व की प्रायः अधिकता ही होती है जो उसे कुकृत करने के लिए बाधित कर देती है | अतः इस नक्षत्र का गुण तामसिकता के श्रेणी में होती है जो

अन्धकार और अप्रत्यक्षता को भी द्योतित करती है | ये वायु प्रधान नक्षत्र है |

इस नक्षत्र का अभिन्न सम्बन्ध शुक्ल-पक्ष ज्येष्ठ मास से है | पशु-यौन के दृष्टिकोण से ये कुकुर जाति का है |

ज्योतिषीय समाधान

(१) . मूला नक्षत्र का पद-३ से संबंधित अशुभ फलों से मुक्ति हेतु **" कर्म-विपाक संहिता "** में निम्नलिखित प्रकरण बताया गया है :-

|| अथाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ||

श्री शिव उवाच

सरय्वाश्चोत्तरे कूले मङ्गलं नाम वे पुरम् |

तत्र क्षत्र्यवसच्चैको मद्यमांसस्य भोगकृत् ||१||

भावसेनश्च नाम्ना स तस्य पत्नी मनोहरा |

वेश्याद्युतरतश्चासौ लुब्धश्चौरेशु सम्मतः ||२||

प्रत्यहं चौरकृत्येन धनसञ्चयसन्मुखः |

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभुत्किल ||३||

सर्पेणापि महादेवि यमदुतैर्यमाज्ञया ।

रौरवे नरके क्षिप्तः षष्टिवर्षसहस्रकम् ।।४।।

नरकान्निर्गतो देवी व्याघ्रयोनिं ततोऽलभत् ।।

मानुष्यत्वं ततो लेभे कुल महति पूजिते ।।५।।

पूर्वजन्मनि भो देवी दीपदानं कृतं यतः ।

तत्फलेन महादेवि धनाढ़यत्वमजायत ।।६।।

मद्यपानफलाद्देवि नानाज्वरसमुद्भवः ।

वेश्यासुरतसंयुक्तो यतोभूत्पूर्वजन्मनि ।।७।।

तेन पापेन भो देवि पुत्राणां मर्म खलु ।

मनस्युद्वेगता नित्यं जाता द्युतरतः पूरा ।।८।।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि सर्वपापविशुद्धये ।

गृहवित्तषडंशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।।९।।

वापीकूपतडागांश्च पाठीमध्ये च कारयेत् ।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ।।१०।।

दशांशं हवं तद्वत्तर्पणं मार्जनं तथा ।

दशवर्णां ततो दद्याद्वृषभेण समविन्ताम् ।।११।।

एवं पापविशुद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।

पुत्रस्य जायते देवि वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ||१२||

मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरंजीविनमुत्तमम् ।

रोगा विनाशमायान्ति व्याधयश्च तथा शिवे ||१३||

इति श्रीकर्मविपाकसंहितायां पार्वतीशिवसंवादे मूलनक्षत्रस्य तृतीयचरणप्रायश्चित्तकथनन्नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ||७८||

अर्थात

शिव जी कहते हैं :-

सरयू नदी के उत्तर किनारे पर मंगलपुर में एक क्षत्रिय मदिरा ,मांस खानेवाला रहता था ||१|| उसका नाम भावसेन था , और उसकी स्त्री मनोहरा थी , वह क्षत्रिये वेश्यासंगी ,जुआरी ,लोभी और चोरी में बड़ा चतुर था ||२|| वह हमेशा चोरी से धन को इकट्ठा किया करता था ,इस प्रकार बहुत सा काल व्यतीत हो जाने के पर उसकी मृत्यु सांप के काटने से हो गई ||३|| हे महादेवि ! यमराज के दूतों ने आज्ञा पाकर रौरव नरक में डाला और वह साठ हज़ार वर्षों तक वास करके ||४|| हे देवि ! नरक से निकलकर बाघ योनि को प्राप्त हुआ ,फिर वहां से उत्तमकुल में मनुष्य लोक में जन्म पाया ||५|| हे महादेवि ! पहले इसने पूर्वजन्म में दीपक का दान

किया था ,उसके फल के प्रभाव से धनी हुआ ||६|| हे देवि ! जो मद्य पीता था उस फल से नाना प्रकार के ज्वरों की उत्पत्ति उसके शरीर में हुई , और पूर्वजन्म में वेश्या से रमन करने से ||७|| पुत्रों का मरण होता रहा और जुआ खेलने से मन में उद्विग्नता रहा करती थी ||८|| हे वरानने ! अब पूर्वजन्म के पापशुद्धि के लिए उसकी शान्ति कहता हूँ | अपने धन में से छठा भाग दान करे और रास्ता के मध्य में बावड़ी ,कुंआ ,तालाब बनवावे और गायत्री के मूलमंत्र का एक लक्ष जप करे ||९-१०|| और दशांश हवन , दशांश तर्पण ,और दशांश मार्जन करे और बैल सहित देश वर्णोंवाली गौ दान दे ||११|| हे देवि ! ऐसा करने से पाप की शुद्धि होती है , इसमें कुछ विचार नहीं करनी चाहिए | पुत्र की प्राप्ति होती है और बंध्यापने की सजानति होती है ||१२|| और मृतवत्सा भी चिरंजीवी पुत्र को प्राप्त होती है और सब रोग व व्याधि नाश होती है ||१३||

|| अठहत्तरवां अध्याय समाप्त ||

(२). इस नक्षत्र के कुप्रभावों के रक्षार्थ हेतु मातेश्वरी कालिका व भगवान रूद्र की उपासना अति शुभफलदायक है |

विशेष :- अपने सभी स्वरूपों में अलौकिक जन्म(अर्थात पार्थिव/लौकिक मृत्यु) हेतु चिंतन व ध्यान मूला-नक्षत्र के

घनात्मक/ऋणात्मक ऊर्जाओं को सृजनात्मक रूप से व्यवस्थापित करेगा ।

।। इति शुभमस्तु ।।

(३). राहु का गोचर

१. नक्षत्र(पद) :- वृश्चिका-राशि के अंतर्गत
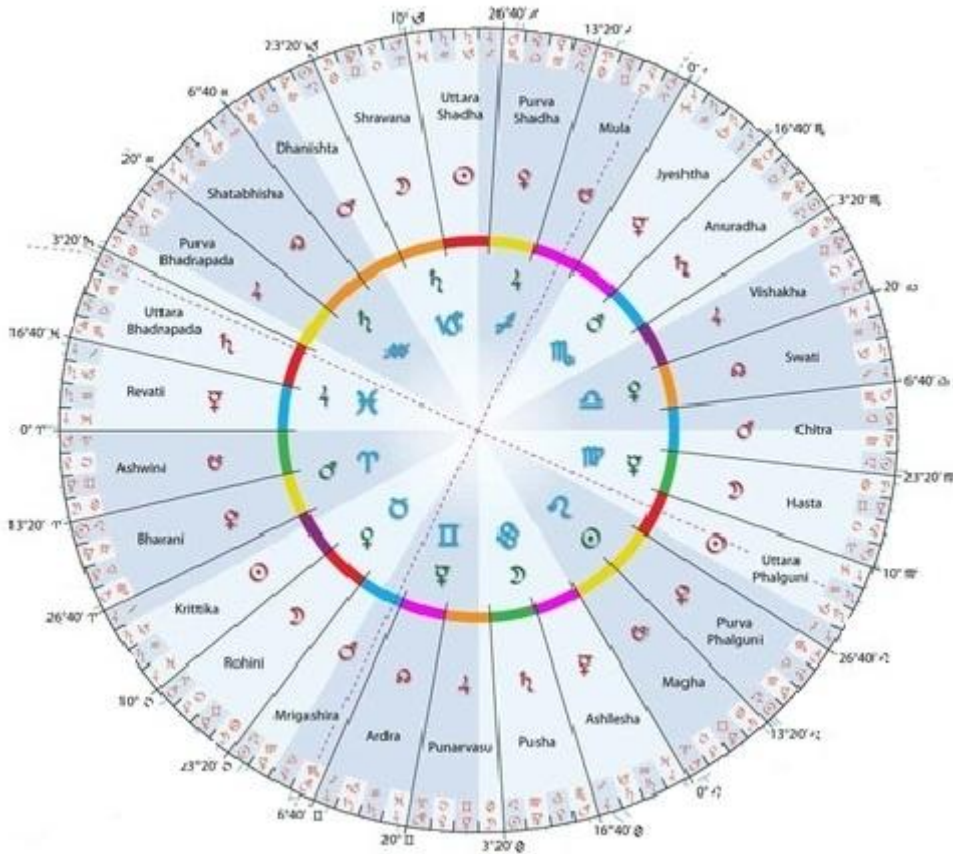
चित्र ७. नक्षत्रें व उनके विभिन्न पदों में निहित राशियां
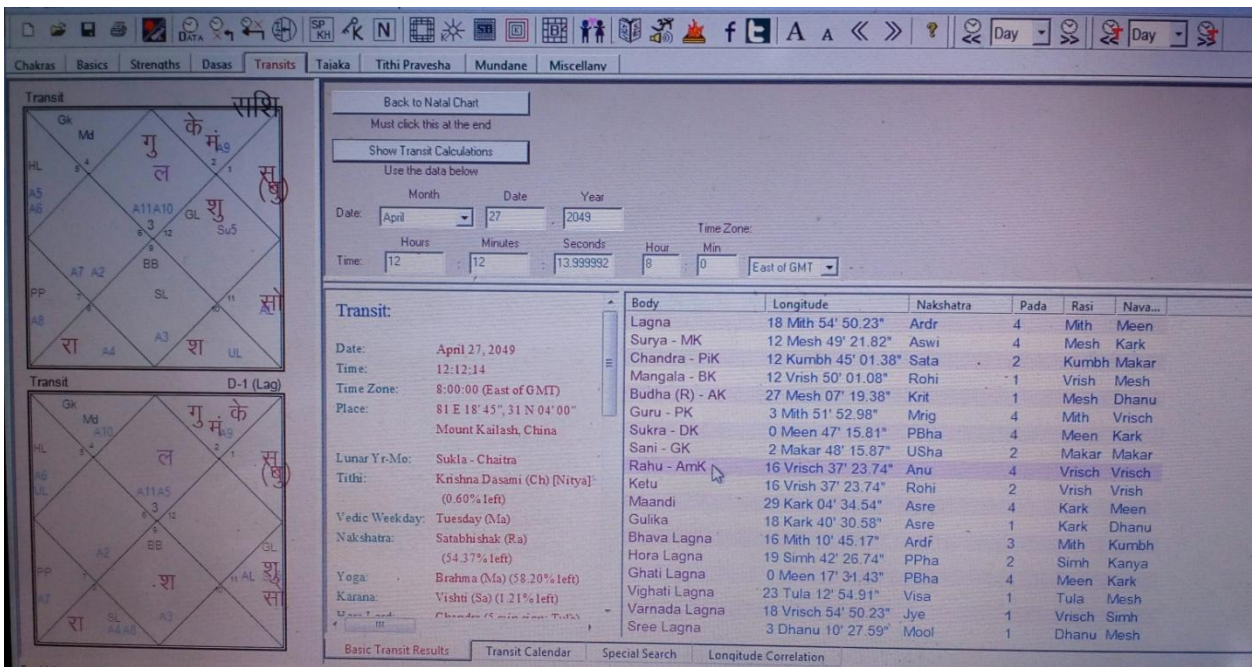
चित्र ८(अ). राहु की अनुराधा[पद-४(वृश्चिका-राशि के अंतर्गत)] में प्रवेश(दिनांक:-२७/अप्रैल/२०४९)

27/04/2049

12:12:14 (0-24 Hrs) +8 Hrs. (East of GMT)

81° E18' 45" 31° N04' 00"

6638 m(↑) −5°c

दृष्टि (संबंध)	राशि	नक्षत्र(पद)	मान (/100)
1. एकपाद (शत्रु)	कन्या	—	00
(अधिमित्र)	कुम्भ	पूर्वभाद्रपद(1+2+3) + शतभिषा + धनिष्ठा(3+4)	73
2. द्विपाद (सम)	कर्क	पुनर्वसु(4) + पुष्य + आश्लेषा	48
(शत्रु)	मीन	पूर्वभाद्रपद(4) + उत्तरभाद्रपद + रेवती	46
3. त्रिपाद (अधिशत्रु)	मेष	अश्विनी + भरणी + कृत्तिका(1)	08
(अधिशत्रु)	सिंह	मघा + पूर्व फाल्गुनी + उत्तर फाल्गुनी(1)	23
4. विशेष (शत्रु)	मिथुन	मृगशिरा(3+4) + आर्द्रा + पुनर्वसु(1+2+3)	73
(अधिमित्र)	मकर	उत्तराषाढ़ा(2+3+4) + श्रवण + धनिष्ठा(1+2)	29
शत्रु	धनु	मूला + पूर्वाषाढ़ा + उत्तराषाढ़ा(1)	02

16° 37' 23" राहु :- अनुराधा-4 (युवावस्था)

[नोट :- ⓐ युवावस्था फलांक → 1/1]
ⓑ (व) ⇒ वक्री ग्रह

चित्र ८(आ).ग्रहों के नक्षत्र-पदें व राहु की दृष्टियां(दिनांक:-२७/अप्रैल/२०४९)

Aspect Table with Relationships

	Sy	Ch	Ma	Bu	Gu	Sk	Sa	Ra	Ke	1st	2nd	3rd	4th	5th	6th	7th	8th	9th	10th	11th	12th
Sy		0	0	0	18	0	33	72	3	35	70	40	20	95	70	45	20	0	0	0	5
Ch	25		75	49	57	0	0	22	72	40	21	95	70	45	20	0	0	0	5	35	70
Ma	0	25		0	0	10	67	100	0	5	40	90	40	20	100	90	45	20	0	0	0
Bu	0	12	0		6	0	45	84	0	18	61	57	14	73	82	57	32	7	0	0	0
Gu	0	78	0	0		33	76	43	0	0	13	50	88	50	50	87	88	62	12	0	0
Sk	10	0	45	22	72		0	37	51	60	20	60	85	60	35	10	0	0	0	15	55
Sa	67	33	33	55	4	93		0	27	54	87	62	77	46	0	0	0	54	87	62	23
Ra	6	69	87	35	86	63	13		100	73	48	23	0	0	0	2	29	73	46	8	98
Ke	0	28	0	0	0	13	62	100		2	29	73	46	8	98	73	48	23	0	0	0

Aspecting planet

Uchcha (exalted) Neecha (debilitated)
Moolatrikona Swagriha (own house)
Adhimitra griha (good friend's house)
Mitra griha (friend's house) Sama griha (neutral house)
Satru griha (enemy's house) Asta (combust)
Adhisatru griha (bad enemy's house)

Chart used: D-1
Full aspect value: 100
Houses from: Lg

Aspect Legend (color code):

Swagriha (own house) — Blue
Adhimitra (best friend) — Bold Italic Green
Mitra (friend) — Green
Sama (neutral) — Black
Satru (enemy) — Red
Adhisatru (worst enemy) — Bold Italic Red

चित्र ८ (इ). वृश्चिका-राशि व ग्रहों की विभिन्न दृष्टियां

(दिनांक :-२७/अप्रैल/२०४९)

17. Anuradha 3°20' Scorpio - 16°40' Scorpio

चित्र :- ९ [स्रोत-ग्रन्थ :- बुक ऑफ़ नक्षत्र - कम्प्रेहैन्सिव ट्रीटाइज ऑन २७ कॉन्स्टेलशनस् (श्री प्रशांत त्रिवेदी)]

संक्षिप्त-परिचय :- तीन तारों के समूह हेतु अनुराधा-नक्षत्र के निर्माण होता है जो एक मध्य भाग में मुड़े हुए छड़ी की भांति प्रतीत होती है |

"अनुराधा" का शाब्दिक अर्थ "राधा के पश्चात" | ज्ञातव्य है कि "अनु-" उपसर्ग के मध्य शब्द "अनुराधा" के अर्थ कि प्रतीति सांकेतिक हो जायेगी | अतएव , "राधा" के विश्लेषण पर ध्यान आकृष्ट करना नीतिगत होगी |

शब्द "राधा" के संदर्भ में भगवान श्री देवादिदेव महादेव की उक्ति मातेश्वरी पार्वती जी के समक्ष है, और जिसे **ब्रह्मवैवर्त पुराण के खंड-२(अध्याय ४८ ,श्लोक ४)** में निम्नांकित रूप से विदित है :-

श्री महादेव उवाच

रा इत्यादानवचनो धा च निर्वाणवाचकः |

ततोऽवाप्नोति मुक्तिं च तेन राधा प्रकीर्तिता ||४||

(ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति-खंड)

अर्थात

(महादेव जी मातेश्वरी पार्वती जी से कहते हैं) - " 'रा' का अर्थ है "पाना" और 'धा' का अर्थ है "निर्वाण"(मोक्ष) | भक्तजन उनसे निर्वाण-मुक्ति पाता है , अतः उन्हें "राधा"' कहा गया है |"

उपरोक्त कथन की प्रासंगिकता भगवान महादेव जी के आगे की श्लोकों के मध्य वार्तालाप से प्रकट होती है और वोन कहते हैं कि :-

श्री महादेव उवाच

भवन धावन रासे स्मरत्यालिंगनं जपन् |

तेन जल्पति संकेतं टार्टर राधान स ईश्वरः ||३९||

राशब्दोच्चारणाद्भक्तो राति मुक्तिं सुदुर्लभाम् |

धाशब्दोच्चारणाद्दुर्गे धावत्येव हरेः पदम् ||४०||

अर्थात

(महादेव जी मातेश्वरी पार्वती जी से कहते हैं) - "हे माहेश्वरी ! मेरे ईश्वर श्रीकृष्ण रास में प्रिया जी के धावन-कर्म का स्मरण करते हैं ,अतः वे उन्हें "राधा" कहते हैं ,ऐसा मेरा अनुमान है | हे दुर्गे ! भक्त पुरुष "रा" शब्द के उच्चारण मात्रा से परम दुर्लभ मुक्ति को

पा लेता है और "धा" शब्द के उच्चारण से वः निश्चय ही श्रीहरि के चरणों में दौड़कर पंहुच जाता है |”

उपरोक्त विचारणीय तथ्यों के आलोक में “अनुराधा” शब्द का शाब्दिक अर्थ "राधा के पश्चात" ही है क्योंकि "राधा" विशाखा-नक्षत्र का पर्यायवाची शब्द है एवं विशाखा(अर्थात राधा) नक्षत्र के पश्चात अनुराधा-नक्षत्र का क्रमांक है |

वैदिक ऋषिाओं व मनीषियों द्वारा इस नक्षत्र के प्रतिक के रूप में एक छड़ी स्वीकार की है जो मध्य-भाग में मुड़ी हुई-सी प्रतीत होती है |इस छड़ी का संकेतार्थ शक्ति व रक्षा हेतु स्वीकृत है |यद्यपि रक्षार्थ हेतु शक्ति के स्वरुप इस छड़ी की प्रतीकात्मकता स्वयं सिद्ध है ,तदापि ये प्रायश्चित हेतु विशेषार्थ रूप से प्रायोजित है ! ऋषियों के मध्य एक "कमल का फूल" भी इस नक्षत्र हेतु प्रतिक मान्य है | जिस भांति एक कमल का फूल कीचड़ के मध्य भी अछूता व निर्मल रहता है ,वैसे ही इस नक्षत्र की योग्यता सात्विक गुणों से परिपूर्ण है और किसी भी परिस्थिति में स्वयं को अभिशापित नहीं होने देता है |ये कीचड़-तुल्य ऋणात्मक भावों के तरंगों व दिग्भ्रमित अवस्था के मध्य ज्ञानार्जन को प्रतिबिंबित करता है | अनुराधा-नक्षत्र के एकात्म आयाम स्वरुप लक्ष्य-प्राप्ति ही साध्य है जो केवल दैवीय-संविधान के मार्ग के मध्य है |विशाखा नक्षत्र के सापेक्ष में अनुराधा अपने सहकर्मियों के लिए वरदान है, अतः संघिये

कार्यों के लिए अनुराधा-नक्षत्र के जातक/जातिका विशेषकर महत्वपूर्ण हैं ।

मित्र-देव (जो द्वादश आदित्यों में एक हैं और इनका आह्वाहन केवलमात्र नहीं किया जाता है) अनुराधा नक्षत्र के अधिष्ठात्री देवता हैं और इनका आह्वान शतभिषा नक्षत्र के अधिष्ठात्री देवता वरुण देव या उत्तर-फाल्गुनी के अद्धिष्ठात्री देवता आर्यमान के संग होता है ।इस नक्षत्र के जातकों का झुकाव ज्ञानार्जन हेतु अधिगमात्मक होता है ।और चूँकि माता सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री देवि हैं ,अतः इस नक्षत्र के जातकों में संगीत के विधा की और विशेष रूप से अभिरुचि होती है ।

प्रकृति और कार्यप्रणाली

इस नक्षत्र की प्रकृति अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण में निहित है जो समूहात्मक सह आनंदमय परिवेश का सृजनकर्ता है ।अनुराधा नक्षत्र दो विपरीत ऊर्जाओं के मध्य संतुलन की स्थिति प्रदान कर प्रकृति के रहस्यात्मक स्वरूपों को जीवंत करता है ।ये चरम सीमाओं पर स्थित विषयों को संवाद हेतु मध्यस्था का प्रतिपालक है ।चूँकि वर्तमान कलिकाल में जब प्रत्येक नक्षत्रों की ऊर्जाओं का दुरूपयोग किया जा रहा है ,अतः अपने अति उदारवादी नीतियों के हेतु अनुराधा नक्षत्र भी इसका भोगांश हुआ है ।यद्यपि तर्क के

धरातल को ही अपने क्रियाशीलता हेतु मापदंड होती है तदापि अपने अभिरुचि की परिसीमा के अनुसार अपने क्षितिज को सदैव बढ़ाने चेष्टा होती है |इनके जातक अपने गुणों को औरों से मेल-मिलाप करने में बहुमुखी प्रतिभा से युक्त होते हैं |

क्रियात्मकता का साधन

अनुराधा नक्षत्र स्वयं में अप्रत्यक्ष रूप से कार्यशील होता है | अतः बाह्य-प्रेरणा की स्रोत से अविभूत होकर ही इसके जातक/जातिका क्रियाशील होते हैं | इस नक्षत्र के अप्रत्यक्षता का मुख्य कारण शनि के प्रभाव क्षेत्र में मंगल का होना है| और ,तदुपरांत, बाह्य-प्रेरणा के मध्य नैमित्तिक क्रियाशीलता मंगल-शनि के संतुलित ऊर्जा की ही देन है |

जाति :- शूद्र

लिंग :- पुरुष

शरीर का अंग/भाग(आयुर्वेद के अनुसार) :- वक्ष-स्थल ,उदर ,आंतें ,महिलाओं में गर्भाशय |और मुख्यतः पित्त के कारकत्व से संबंधित है |

अनुराधा(पद-४) की विशेषताएं

नक्षत्र के चतुर्थ-पद की अक्षांश १३ डिग्री व २० मिनट से लेकर १६ डिग्री व ४० मिनट की सीमा तक निहित है और इसका नवांश वृश्चिका राशि में ही पड़ता है | अतः सभी प्रकार के गुप्त और सर्व-सुलभ लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रचुर मात्रा में अनुराधा की ऊर्जाएं उपलब्ध हैं | लेकिन सबसे बड़ी चुनौती उन ऊर्जाओं का सृजनात्मक रूप से विस्थापन है जो केवल प्रकृति के दैवीय संविधान के अनुरूप क्रियाशील हो | इस नक्षत्र में कोई ग्रह-विशेष अति उत्साह व भावनात्मकता के साथ क्रियाशील होते हैं | अतः ये नक्षत्र नियमानुसार जातक को उपलब्ध्यिों का कोष प्रदान कर देता है ! इस पद के ऊर्जा को दिशा-निर्देशित करने हेतु सूर्य ,गुरु ,व केतु मान्य हैं |

गण, गुण व तत्त्व

ये नक्षत्र देव-गण का है और निरंतर सामांजस्य सृजन करनी की चेष्टा के साथ सृष्टि के नियामक नियंता तत्त्वों को अपने अन्वेषणात्मक प्रकृति हेतु संज्ञान में लाने की निरंतर चेष्टा भी करता है |

मान्यता है की ये एक तामसिक नक्षत्र है और इसका संबंध अग्नि-तत्त्व से है जबकि गोत्र का संबंध सप्तऋषि अंगिरस से है | इसके अग्नि-तत्व की प्रधानता इसके सौम्यता ,मित्रता व संगठन हेतु उत्साह के लिए मान्य है | अतः मंगल के अग्नि तत्त्व की प्रचुरता की अभाव है और भावनात्मक जल के ऊपर के अग्नि तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है ! अतः ये एक मृदुल स्वभावी नक्षत्र है |

यद्यपि तामसिक गुण की प्रधानता है ,अपितु इस नक्षत्र की चरम सीमाओं पर स्थित विषयों को संतुलित करने की शक्ति-सम्पन्नता अद्वितीय है | इन प्रकरणों के मध्य आध्यात्मिक उपलब्धियां तार्किक अनुक्रम हो जाती हैं |

ये वैशाख (शुक्ल-पक्ष) तथा शुक्ल- व कृष्ण-पक्ष के द्वादशी–तिथि से संबंधित है ।

पशु-यौन के दृष्टिकोण से ये नक्षत्र हिरन जाति का है ।

ज्योतिषीय समाधान

(१). अनुराधा(पद-४) से संबंधित अशुभ फलों से मुक्ति हेतु " **कर्म-विपाक संहिता** " में निम्नलिखित प्रकरण बताया गया है :-

|| अथैकसप्ततितमोऽध्यायः ||

श्री शिव उवाच

बन्दीजनोंवसच्चैकः सौराष्ट्रविषये शुभे |

स कविर्भाग्यवान्देवि स्वधर्मनिरतः सदा ||१||

तस्य स्त्री सुब्दारी देवि पतिसेवासु तत्परा |

एकस्मिन् दिवसे देवी ब्रह्मचारी समागतः ||२||

आतिथ्यकारने तस्य चासमर्थस्तथा शिवे |

उपोषणं कृतं तेन द्वारे बन्दिजनस्य ||३||

प्रभाते स वरारोहे शापं दत्त्वा गतस्तु वै |

ततस्तु देवयोगेन मार्जारी तत्र सूतिका ||४||

पञ्चपुत्रा वरारोहे घातितास्तस्य च स्त्रिया |

मार्जारी च तदा देवि क्षुदार्ता च तदा मृता ||५||

ततो बहुतिथे काले तस्य मृत्युरभूत्पुरा |

पत्नी पतिव्रता तस्य सटी जाता च तत्क्षणात् ||६||

सत्यलोके वरारोहे युगमेकमुवास सः |

पत्न्या सह वरारोहे सौख्यं हि मानसेप्सितम् ||७||

भुक्तं देवांगना सार्द्धं पुनः पुण्यलक्ष्ये सति ।

मानुष्यत्वं ततो लेभे सह पत्न्या वरानने ॥८॥

धनधान्यसमायुक्तो वारा भार्य्या विवाहिता ।

पुत्राश्च बहवो जातास्तेषां मृत्युभूत्किल ॥९॥

सा ज्वरेण समुद्विग्ना मध्ये तापयुता पुनः ।

तस्य पापस्य वै शान्ति शृणु त्वं गिरिजे वरे ॥१०॥

जादवेदस्य मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।

बिडाली प्रतिमां कृत्वा पञ्चबालेन संयुक्ताम् ॥१२॥

स्वर्णस्याथ च रौप्यस्य पल पञ्चदशस्य तु ।

सवस्त्रां वै तदा दद्याद्ब्राह्मणाय वरानने ॥१२॥

ग्रामेकां रक्तवर्णां च तान विप्राय प्रदापयेत् ।

अमायां पिण्डदानं च सोमवारे तथा गुरौ ॥१३॥

व्रतं च रविसप्तम्यां कुर्य्याद्वै भार्य्या सह ।

ततः पुत्रो भवेद्देवी चिरंजीवी तथोत्तमः ॥१४॥

व्याधिनाशो भवेद्देवी वन्ध्यात्वं पार्वतीशिवसंवादे अनुराधानक्षत्रस्य चतुर्थचरणप्रायश्चित्तकथनन्नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ॥७१॥

अर्थात

शिव जी कहते हैं :-

सौराष्ट्र देश में एक बंदीजन कवीश्वर रहता था , वह बड़ा सौभाग्यवान और अपने धर्म में हमेशा दृढ़ रहता था ||१||

हे देवि ! उसकी सुंदरी स्त्री पतिसेवा मन लगाकर करती थी | एक दिन वहां एक ब्रह्मचारी आया | हे शिवे ! वः ब्रह्मचारी के सत्कार करने में असमर्थ रहे , फिर वः ब्रह्मचारी उस बंदीजन के घर उपवासकर रात्रि भर रहा ||२-३|| हे वरारोहे ! वहां से प्रातःकाल उठकर ब्रह्मचारी उनको शाप देकर चला गया | बंदीजन के घर में एक बिल्ली ब्याई थी ||४|| हे वरारोहे ! उसके पाँचों पुत्रों को मार डाला , और वह बिल्ली भूख से दुखी होकर मर गई ||५|| फिर बहुत दिन बीत जाने के बाद उस बंदीजन की मृत्यु हो गई और उसकी पतिव्रता स्त्री पति के साथ सती हो गई ||६|| हे वरारोहे ! तब वह एक युग पर्यन्त सत्यलोक में वास करता रहा और स्त्री के साथ वहां मनोवाञ्छित सुख का भोग करता रहा ||७|| हे वरानने ! देवांगनाओं के साथ सुख को भोग कर फिर पुण्य क्षीण होने पर स्त्रीसहित मृत्युलोक में मनुष्ययोनि में जन्म लिया ||८|| धनधान्य से युक्त होकर अच्छी स्त्री से विवाही और उसके बहुत से पुत्र हुए ,लेकिन उनकी मृत्यु होती गई ||१०|| हे गिरिजे ! उसकी स्त्री ज्वर से अति पीड़ित होती रही और बीच बीच में ताप से दुःखी रही |

अब सुनो जिस पाप से दुःखी थी उसकी शान्ति कहता हूँ ||१०|| " जातवेदसे." इस मन्त्र का लक्ष जप और पांच पुत्रों सहित बिल्ली की मूर्ति बनावे ||११|| हे देवि ! सुवर्ण या चांदी की पंद्रह पल प्रमाण मूर्ती बनवाकर वस्त्रादिसहित ब्राह्मण को दान दे ||१२|| एक गौ लाल रंग की ब्राह्मण को दे तथा सोमवार के दिन या गुरूवार से युक्त अमावस्या के दिन पिण्डदान करे ,कुछ ब्राह्मणों को भोजन दे ||१३|| हे देवि ! सप्तमीयुक्त रविवार के दिन पत्नी सहित व्रत करे | ऐसा करने से चिरंजीवी उत्तम पुत्र को प्राप्त करे ||१४|| हे देवि ! तभी सम्पूर्ण व्याधियों का नाश हो और वन्ध्यापने की शान्ति हो ||१५||

|| इकहत्तरवां अध्याय समाप्त ||

(२). बारह आदित्यों ,विशेषतया मित्र देव, के पूजन-अर्चन से अनुराधा नक्षत्र से संबंद्धित कष्टों से मुक्ति मिलती है| अथवा भगवान् हरिहर-देव(जिनका अर्ध स्वरुप भगवान् शिव व् अर्ध स्वरुप भगवान् विष्णु की है) की उपासना सर्वोत्तम है |

|| इति शुभमस्तु ||

अवलोकन सह टिपण्णी

(१).

अहोरात्रि विभजते सूर्योमानुषदैविके |

रात्रिः स्वप्नाय भूतानांचेष्टायै कर्मणामहः ||६५||

पित्रये रात्र्यहनी मासः प्रविभागस्तुपक्षयोः |

कर्मचेष्टा स्वहः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी ||६६||

देवे रात्र्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः |

अहस्तत्रो दगयनंरात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् ||६७||

ब्राह्मणस्य तु क्षपाहस्य यत्प्रमाणं समासतः |

एकैकशोयुगानान्तु क्रमशस्तन्नि बोधत ||६८||

चत्वायार्हूः सहस्त्राणि वर्षाणान्तु कृतं युगम् |

तस्य तावच्छति संध्या सांध्यांश्च तथाविधः ||६९||

इतरेषु ससंध्येषु ससंध्याशेषु च त्रिषु |

एकापायें वर्तन्त सहस्राणि शतानि च ||७०||

यदेतत् परिसंख्यातमादावेव चतुर्युगम् |

एतद द्वादशसाहस्त्रं देवानां युगमुच्यते ||७१||

दैविकानां युगानां तु सहस्रं परिसंख्यया |

ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावती रात्रिरेव च ||७२||

(प्रथमोऽध्यायः , मानवधर्मशास्त्रम् , ब्रह्मऋषि मनुदेव)

(२).

लोकानामन्तकृत् काल्ह कालोऽन्यः कालनात्मकः |

स द्विधा स्थूल सूक्ष्मत्वां स्थूलसूक्ष्मत्वांमूर्तश्चामूर्त उच्यते ||१०||

प्राणादिः कथितोऽमूर्तस्त्रुट्याद्ऽमुरत्संज्ञकः |

षडभिः प्राणैर्विनाडीस्यात्तत्ट्षष्टया नाडिका स्मृता ||११||

नाडीशष्टया तू नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् |

तत् त्रिंशता भावमासः सावनाऽर्कोदयैस्तथा ||१२||

ऐन्दवस्तिथिभिसतद्वत् संक्रान्त्या सौर उच्यते |

मासैर्द्वादशभिर्वर्षं दिव्यं तदह उच्यते ||१३||

सुरासुराणामान्योन्यमाहोरात्रं विपर्ययात् |

तत्वशक्तिः षड्गुणा दिव्यं वर्षमासुरमेव च ||१४||

तदद्वादशसहस्राणि चतुर्युगभूदाहृतं |

सुर्यव्दसंख्ययाद्विस्रिसागरैर्युतोहतैः ||१५||

सन्ध्यासन्ध्याशंसहितं विज्ञेयं तच्चतुर्युगम् |

कृतादिनां व्यवस्थेयं धर्मपादव्यवस्थया ||१६||

युगस्य दशमो भागश्वतुस्त्रिद्येकसंगुणः |

क्रमात् कृतयुगादिनां षष्ठांशः स्वकः ||१७||

(अथ सूर्यसिद्धान्ते स्पष्टाधिकारः ||२||)

अर्थात

एक काल सृष्टि में संहारकर्ता है तथा दुसरा गणनिये है | कलनात्मक-काल की प्रकृति स्थूल होने से मूर्त रूप और सूक्ष्म होने हेतु अमूर्त है ||१०|| प्राणादि को मूर्त संज्ञक हैं जबकि त्रुटियादि को अमूर्त संज्ञक हैं | छह श्वास की एक विनाडी ,साठ विनाडी की एक नाडी का एक नाक्षत्र अहोरात्र कहा जाता है ||११|| तीस अहोरात्रों का एक मास होता है और दो सूर्योदयों के मध्य का दिवस सावन है ||१२|| उसी भाँति तीस तिथियों का एक चन्द्र-मास ; जबकि एक संक्रान्ति से अगले संक्रान्ति तक को सौर-मास कहा जाता है | ऐसे बारह मासों को दिव्य-वर्ष कहा जाता है ||१३|| सुरों का असुरों के अहोरात्र एक दूसरे से विपरीत हैं | उनके(असुरों का) साठ अहोरात्रों का छह-गुणा देवताओं का

एक दिव्य-वर्ष होता है ||१४|| बारह सहस्र(हज़ार) दिव्य वर्षों को एक चतुर्युग कहते हैं। एक चतुर्युग तिरालीस लाख बीस हज़ार सौर-वर्षों का है ||**१५**|| चतुर्युगी की उषा और संध्या काल होते हैं। सतयुग और अन्य युगों का अन्तर, जैसे मापा जाता है, वह इस प्रकार है, जो कि चरणों में होता है ||**१६**|| एक चतुर्युगी का दशांश को क्रमशः चार, तीन, दो और एक से गुणा करने पर कृतयुग और अन्य युगों की अवधि मिलती है। इन सभी का छठा भाग इनकी उषा और संध्या होता है ||**१७**||

काल निर्णय के दृष्टिकोण से उपरोक्त दो बिंदुएं निम्नलिखित मान्य धरातल प्रदान करती हैं :-

(क) दिनमान(!) के द्वापर युग के बीते हुए ५१२१ वर्ष हो चुके हैं | और वर्त्तमान में का रात्रिमान(!) के द्वापर अंतिम चरण में है और शास्त्रोक्त(सूर्यसिद्धान्त) है कि वर्त्तमान द्वापर युग कि अवधि सन् ३१०१ ईसा पूर्व को समाप्त हो गई | और दिनमान व रात्रिमान के संयुक्त कलिकालों(जिसकी कुल अवधि २५९२ वर्षों का है) का भी समापन सन् ५०९ ईसा पूर्व हो चुकी है और वर्त्तमान में द्वापर युग अपने अंतिम पड़ाव पर है - अर्थात सन २०८३ ईस्वी को त्रेता/कृतयुग का आरम्भ प्रकृति द्वारा निश्चित किया जा चुका है |

ज्ञातव्य है की सौरवर्ष/दिव्यवर्ष के आधार पर गणना की गई है जो आजकल के परिप्रेक्ष्य में तनिक विकृत है और जिस हेतु मानव

समाज में युगों को परिवर्तन से संबंधित भ्रान्तियाँ हैं | अतः उक्त समस्या के निदानार्थ हेतु प्रामाणिक ग्रंथो का अध्ययन वांछित व अति महत्वपूर्ण है | उदाहरणतया :- मानवधर्म शास्त्र तथा सूर्यसिद्धांत | आज के परिप्रेक्ष्य में जब कलियुग की कालिमा वर्त्तमान रात्रिमान के द्वापरयुग के द्वार पर खड़ी है प्रस्थान करने के लिए ,लेकिन मानवों का अहो ! दुर्भाग्य ही है कि अज्ञानता के अन्धकार में स्वयं को दीप्तमान कर पाने में असक्षम हैं | इस प्रकल्प का कार्य-कारण सिद्धांत का आधार आकाशीय अंधकारमय स्थिति की है जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों व उनके पदों के क्रमिक स्वामियों के मध्य का सामंजस्य व्युत्क्रमानुपाती है ! अतः लेखक द्वारा "रात्रिमान" व "दिनमान" शब्दों का प्रयोग आरोही-क्रम के वर्त्तमान चतुर्युगों के लिए किया गया है | ये आरोही-क्रम के वर्त्तमान चतुर्युग ही इस विषय को प्रमाणित करते हैं कि सृष्टि के गत अवरोही-क्रम के चतुर्युग में आकाशीय अंतरिक्ष दीप्तमान थे ,जबकि वर्त्तमान में इसके विपरीत ,अर्थात अंधकारमय !

ऐसे में प्रकृति द्वारा सृष्टि के अलग अलग कालखण्डों में गोचरीय ग्रहों को उपादान बनाकर कई प्रकार के प्रकरण अर्जित किये जाते हैं जिससे कि संतुलन कि स्थित सृजित की जा सके | इन्हीं में एक है राहु-केतु का गोचर जो सन् २०४५ से २०५० तक के लिए विशेष रूप से मान्य होगा | इस कालखंड के मध्य राहु गोचर में मकर- , धनु-

व वृश्चिका राशियों से होकर और केतु कर्क- ,मिथुन- व वृषभ राशियों से होकर अपने-अपने क्रमिक नैतिकताओं का निर्वहन को क्रियान्वित करेंगे | अतः इन सभी राशियों के अंतर्गत आनेवाले नक्षत्रों के पदों पर विश्लेषण अति अनिवार्य हो जाती है | ज्ञातव्य है की राहु के धनु(जबकि कुछेक अन्य शास्त्रों में वृश्चिका राशि विदित है) राशि में अपने नीचत्व की प्राप्ति करेंगे और केतु की मिथुन(किसी किसी शास्त्रों में वृषभ राशि में) राशि में नीचत्व प्राप्ति योग है | ग्रह-विशेष की ये स्थिति विशेष है क्योंकि आकाशीय-तत्व का ग्रह राहु और जलीय-तत्व का ग्रह केतु का क्रमशः धातु-संज्ञक और जीव-संज्ञक (कृपया बृ.प.हो.शा.,अध्याय ३,श्लोक ४७ को देखें) हैं और अपने नीचत्व स्थिति में जा रहें हैं | कालखण्ड की ये परिसीमा विशेष हो जाती है क्योंकि अन्य सभी ग्रहों से संबन्धों का विश्लेषण अति आवश्यक है क्योंकि लौकिक जगत में घटनाओं का क्रम गोचर में ग्रहों की स्थिति नक्षत्रों के आधार पर निर्धारित होता है | बुद्धिजीवी ज्योतिषविदों से सानुनय आग्रह है कि प्रस्तुत आंशिक विश्लेषण संकेत मात्र लेंगे और विशेष कुछ कहने कि आवश्यकता नहीं है क्योंकि जनमानस के ह्रदय में केवल अपने अधिष्ठात्री देव व/ देवी का ही निवासस्थान सदैव हो ऐसी मेरी भगवान पिताजी भोलेनाथ व मातेश्वरी माँ पार्वती जी के श्रीचरणों में आत्मिक प्रार्थना है |

विशेष, प्रस्तुत पुष्तक के खण्ड-२ में केतु व उसके गोचर के संबन्ध में विस्तार रूप से विभिन्न विषयों को प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा ।

//हरिहरः ॐ तत्सत् //

संदर्भित ग्रन्थ-सूची

1.बृहत्पराशरहोराशास्त्र

2.बृहज्जातकम्

3.उत्तरकलामृतम्

4.श्रीमद्भगवद्गीता

5.प्रश्नचण्डेश्वर

6.सूर्यसिद्धान्त

7. फलदीपिका

8. श्रीपतिपद्धतिः

9.बुक ऑफ़ नक्षत्र - कम्प्रेहैन्सिव ट्रीटाइज ऑन २७ कॉन्स्टेलशनस्

10.महाभारत

11.शतपथ-ब्राह्मण

12.तैत्तिरीयारण्यक

13.कर्म-विपाक संहिता

14.ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृति-खंड)

15.मानवधर्मशास्त्रम्

16. महानिर्वाणः तन्त्रम्

17.सारसंग्रह

लेखक-परिचय

आप श्रीमान किसलय कश्यप हैं जिन्हें अध्यात्म के विधा के संदर्भ हेतु संज्ञान जीवन के लगभग अधेड़ उम्र के कुछ पूर्व हुई ,और एकात्म व समर्पित भाव चतुर्थ पुरुषार्थों की प्राप्ति हेतु प्रयासशील हैं जिस हेतु ,समयांतराल में, आप अपने स्वामी के श्रीचरणों में पुनः प्रतिष्ठित हो सकें | आप वैदिक-साहित्य व आगम-शास्त्रों में विशेष रूचि रखते हैं क्योंकि :-

१). आगम- और क्रियमान- कर्म क्रमशः वर्त्तमान तथा भविष्य को गतिशीलता प्रदान करती है क्योंकि ये विधा राहु के कार्यक्षेत्र में आता है (जबकि संचित- और प्रालब्ध- कर्म केतु की जिम्मेदारी है और ये दोनों संयुक्त भाव से व्यैक्तिक **जैविक-अक्ष** का निर्माण करते हैं) ; एवं

२). भगवान् पिताजी महादेव मातेश्वरी माँ पार्वती जी से निम्नोक्त सूक्त कहते हैं कि :-

श्रीमहादेव उवाच

कलिकल्मषदिनानां द्विजातीनां सुरेश्वरि |

मेध्यामेध्यविचाराणां न शुद्धिः श्रौतकर्मणा ||

न संहितादयैः स्मृतिभिरिष्टसिद्धिर्नृणां भवेत् ।

सत्यं सत्यं पुनः पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते ।।

वीणा ह्यागमार्गेण कलौ नास्ति गतिः प्रिये ।

श्रुतिस्मृतिपुराणादौ मयैवोक्तं पूरा शिवे ।

आगमोक्तविधानेन कलौ देवान्यजेत्सुधीः ।।

कलावागम मुल्लङ्ध्य योऽन्यमार्गे प्रवर्त्तते ।

न तस्य गतिरस्तीति सत्यं सत्यं न संशयः ।।

निर्वीर्याः श्रौतजातिया विषहीनोरगा इव ।

सत्यादौ सफला आसन्कलौ ते मृतिका इव ।।

पांचालिका यथा भित्तौ सर्वेन्द्रियसमन्विताः ।

अन्यमन्त्रैः कृतं कर्म वन्ध्यास्त्रीसंगमो यथा ।

न तत्र फलसिद्धिः स्याच्छ्रम एव हि केवलम् ।।

कलावण्योदीतैर्मार्गैः सिद्धिमिच्छति यो नरः ।

तृषितो जान्हवीतीरे कूपन खनति दुर्मतिः ।।

कलौ तन्त्रोदिता मन्त्राः सिद्धास्तूर्णं फलप्रदाः ।

शस्ताः कर्मसु सर्वेषु जपयज्ञक्रियादिषु ।। (महानिर्वाणोक्त)

ऐहिक जीवन के एक पड़ाव पर लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी भी किये अपितु इच्छाशक्ति की कमी हेतु सफल नहीं हो पाएं | हालांकि आप अपनी एकाग्रता को नीतिगत परिवेश के मानदण्डों पर केंद्रित कर सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन से साक्षात्कार किये और उत्तरोत्तर आत्मावलोकन हेतु विकासशील भी हैं |

आप अपनी भावनाओं के प्राकट्य हेतु कविताओं के पंक्तियों को माध्यम बनाते हैं ,और हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं में अपनी कवितायें प्रस्तुत करने की चेष्टा करते हैं | आप संस्कृत-भाषा ,जो सबों के लिए नैसर्गिक मातृभाषा है, को आत्मसात करने का प्रयास भी कर रहें हैं|

आपका वर्त्तमान प्रयास पीएचडी(मैनेजमेंट साइंस) में नामांकन हेतु है |

//हरि ॐ //

अप्रकाशित पुष्तकें :-

१) // डिवाइन द मदर - अ चाइल्डस् प्ले ऑफ़ वर्ड्स //

(नोट :- अंग्रेजी में कविताओं की पुष्तक) ; एवं

२). जैविक-अक्षांश (केतु रुपी छाया की लौकिक माया - सन् २०४५-२०५०) :- खण्ड – २

|| इति शुभमस्तु ||

// शुभ 卐 लाभ //